ISSN 2277-7660

पर्यावरण संरक्षण को समर्पित एक अनूठी पारिवारिक, सामाजिक, साहित्यिक एवं आध्यात्मिक मासिक पत्रिका

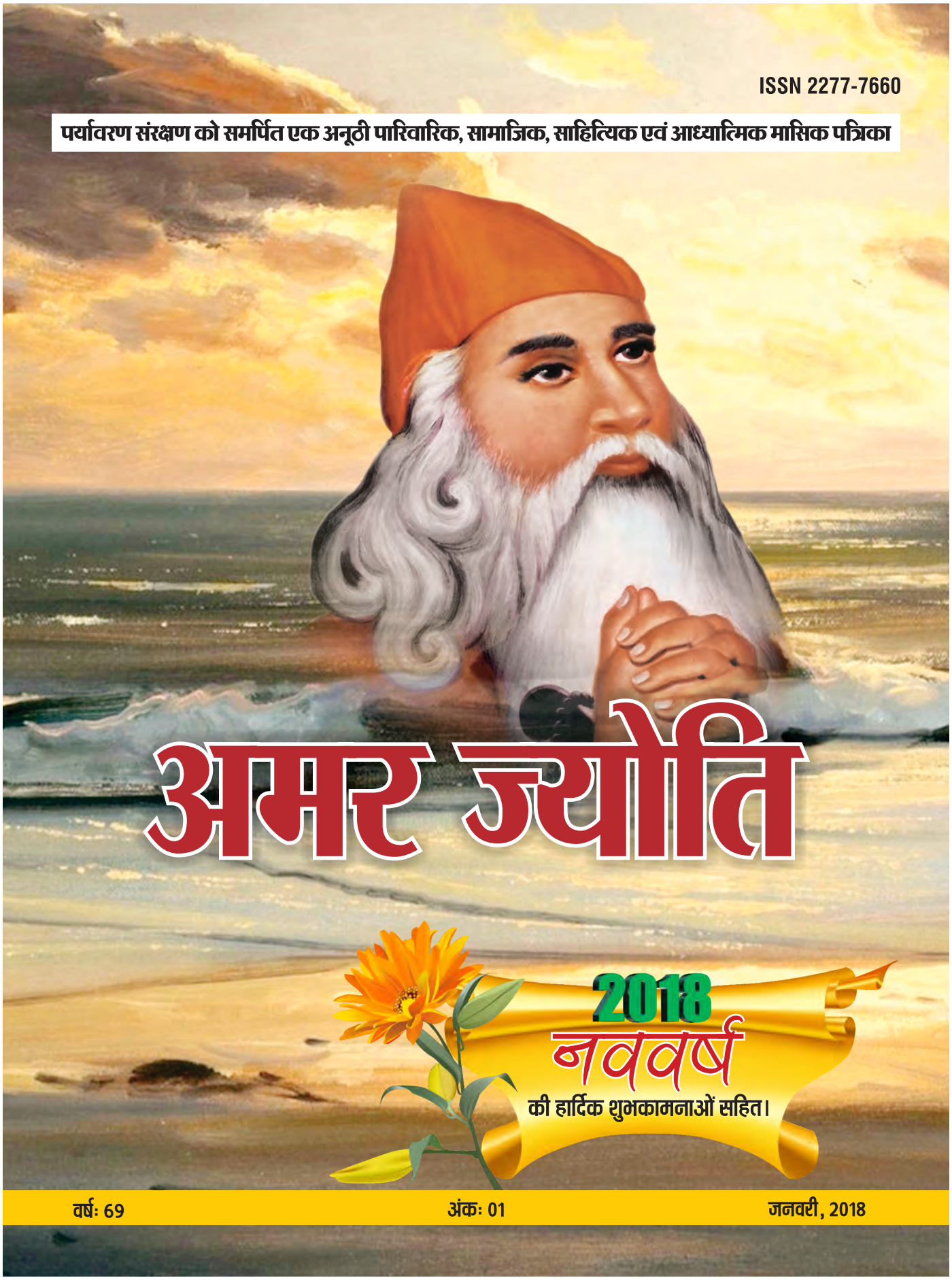

अमर ज्योति

2018
नववर्ष
की हार्दिक शुभकामनाओं सहित।

वर्षः 69 अंकः 01 जनवरी, 2018

बिश्नोई समाज के प्रमुख धाम

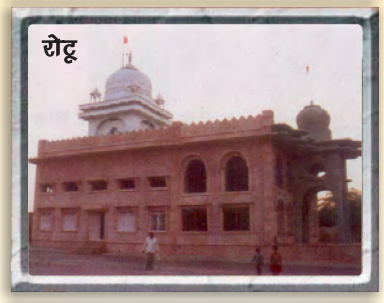

जाम्भाणी पर्व एवं अमावस्या

सम्वत् 2074 माघ की अमावस्या

लगेगी-15.01.2018, सोमवार, देर रात्रि में 5.11 बजे
(अर्थात् 16.1.2018 को सूर्योदय से 2 घंटा 20 मिनट पहले)
उतरेगी-17.01.2018, बुधवार, प्रातः में 07.46 बजे
मेला: 16.01.2018- पीलवा, खातेगांव, मेहराणा धोरा

सम्वत् 2074 फाल्गुन की अमावस्या

लगेगी-14.02.2018, बुधवार, रात्रि 12.46 बजे
उतरेगी-15.02.2018, गुरुवार, रात्रि 2.34 बजे
मेला: 15.02.2018- मुकाम, सम्भराथल, पीपासर, कांठ, लोहावट, सोनड़ी, मेघावा, भींयासर

सम्वत् 2074-75 चैत्र की अमावस्या

लगेगी-16.03.2018, शुक्रवार, सायं 6.17 बजे
उतरेगी-17.03.2018, शनिवार, सायं 6.41 बजे
मेला: 17.03.2018- जाम्भोलाव, लोधीपुर, सोनड़ी

उनतीस धर्म नियम

- तीस दिन सूतक रखना।
- पांच दिन ऋतुवन्ती स्त्री का गृहकार्य से पृथक् रहना।
- प्रतिदिन सवेरे स्नान करना।
- शील का पालन करना व संतोष रखना।
- बाह्य और आन्तरिक पवित्रता रखना।
- द्विकाल संध्या-उपासना करना।
- संध्या समय आरती और हरिगुण गाना।
- निष्ठा और प्रेमपूर्वक हवन करना।
- पानी, ईंधन और दूध को छान कर प्रयोग में लेना।
- वाणी विचार कर बोलना।
- क्षमा-दया धारण करना।
- चोरी नहीं करनी।
- निन्दा नहीं करनी।
- झूठ नहीं बोलना।
- वाद-विवाद का त्याग करना।
- अमावस्या का व्रत रखना।
- विष्णु का भजन करना।
- जीव दया पालणी।
- हरा वृक्ष नहीं काटना।
- काम, क्रोध आदि अजरों को वश में करना।
- रसोई अपने हाथ से बनानी।
- थाट अमर रखना।
- बैल बधिया नहीं कराना।
- अमल नहीं खाना।
- तम्बाकू का सेवन नहीं करना।
- भांग नहीं पीना।
- मद्यपान नहीं करना।
- मांस नहीं खाना।
- नीला वस्त्र व नील का त्याग करना।

प्रकाशक :
बिश्नोई सभा, हिसार

संपादक
डॉ. सुरेन्द्र कुमार बिश्नोई

सह संपादिका
श्रीमती अनिला बिश्नोई

कार्यालय पता :
'अमर ज्योति'
श्री बिश्नोई मन्दिर
हिसार - 125 001 (हरियाणा)
फोन : 8059027929
email: editor@amarjyotipatrika.com,
Website : www.amarjyotipatrika.com

सभा कार्यालय दूरभाष :
फोन : 01662-225804

इस पत्रिका में उल्लेखित सभी पद अवैतनिक एवं निष्काम सेवार्थ है।

सदस्यता शुल्क :
वार्षिक : ₹ 100
25 वर्ष : ₹ 1000

"अमर ज्योति में प्रकाशित लेख एवं विचार लेखकों के वैयक्तिक हैं। संपादक का इनसे सहमत या असहमत होना आवश्यक नहीं है। लेख संबंधी आपत्तियों हेतु सीधे लेखक से सम्पर्क करें"

'अमर ज्योति' का ज्ञान दीप अपने घर आँगन में जलाइये।

विषय अनुक्रमणिका

विषय	पृष्ठ
सबद-70	4
सम्पादकीय	7
साखी	8
लोकमंगल का अनिवार्य तत्त्व 'अहिंसा' और गुरु जाम्भोजी	10
आदि सबद अनाहद वाणी	12
नववर्ष और हम, स्वागत नववर्ष	14
ये नववर्ष हमें स्वीकार नहीं	15
त्रिताप हरो जम्भेश्वर	16
संत वील्होजी के काव्य में लोकमंगल	17
मुक्ति का अद्‌भुत साधन "श्रीमद्‌भगवदगीता"	19
जाम्भाणी कुण्डलियाँ	20
बधाई सन्देश	21
आयुर्वेद के अनुसार षड्‌ऋतुओं में आहार-विहार	22
जांभाणी हरजस: वील्होजी कृत हरजस राग गावड़ी व धनांसी	25
लोक साहित्य: बिश्नोई लोकगीत	26
पर्यावरणं रक्षन्तु: वन्य जीवों पर मंडराता संकट	27
कैरियर: हॉस्पिटल मैनेजमेंट है अच्छा विकल्प	29
बाल कविताएँ	31
अमर रहे अमर ज्योति, अभिनन्दन है तुम्हारा नव वर्ष 2018	32
परमधन सन्तोष : गुरु जाम्भोजी की दृष्टि में	33
इन्हें रोक न पाए कोई सरहद.....	35
सहज सेवा से प्राप्ति	36
मन की शक्ति	37
नववर्ष की प्रफुल्लित किरणें मुबारक	38
दक्षिण भारतीय बिश्नोई युवा सम्मेलन आयोजित	39
बिश्नोई सभा, हिसार ने किरण गोदारा को किया सम्मानित	41
नायगांव (मुम्बई) में सम्पन्न हुआ 8 दिवसीय जाम्भाणी महायज्ञ	42

सभी विवादों का न्यायक्षेत्र हिसार न्यायालय होगा।

सबद-70

दोहा

महलू खां कह देवजी, भिस्त किस विध होय।
ऐसा राह बताय दो, खुदा मिले हम सोय।
राठौड़ महलूखान ने, बात जूं पूछी विचार।
झूठ सांच ब्योरो करो, तासु होय सुचियार।

एक समय महलूखान अजमेर का सूबेदार और जोधपुर नरेश सांतल राव, ये दोनों ही जम्भेश्वर जी के पास ज्ञान श्रवणार्थ आये। इससे पूर्व भी दोनों श्री देवजी का चरित्र देख चुके थे। गुरुजी ने इन दोनों महानुभवों को युद्ध से निवृत्त करके आपस में सुलह करवायी थी। महलूखान ने आकर पूछा कि हे देव! आप हमें स्वर्ग प्राप्ति का उपाय बतलाइये जिससे खुदा की प्राप्ति हो सके। उसी समय दूसरा प्रश्न करने से पूर्व ही सांतल राव ने कहा हे प्रभु! बिश्नोई मेरे गुरु भाई है, मैं ऐसा मानता हूं किन्तु ये लोग मुझे राज्य का भाग ठीक से नहीं देते हैं। न तो मैं इनको दण्ड ही दे सकता और न ही कुछ कह सकता। अब आप ही बतलाइये बिना कर लिये मेरा कार्य कैसे चलेगा। तब जम्भेश्वर जी ने कहा- 'आज से तूं बिश्नोइयों से पांचवां भाग कर के रूप में लिया कर, जिससे वे लोग प्रसन्नतापूर्वक दे देंगे। उसी दिन से वह अन्य लोगों से तो चौथा भाग लिया करता था किन्तु बिश्नोइयों से पाँचवां हिस्सा लेना प्रारम्भ कर दिया। यह परम्परा बिश्नोइयों के लिये अन्त तक चलती रही।

तत्पश्चात् दोनों ने एक सवाल ही पूछा कि हे प्रभु! आप हमें बतलाइये कि सत्य क्या है और झूठ क्या है। इसका सही-सही निर्णय कीजिये हम राजा लोग हैं, हमें सत्य-असत्य का पूरा-पूरा पता नहीं चल पाता, जिस कारण से हम लोग कभी-कभी अन्याय कर बैठते हैं। तब जम्भेश्वर जी ने सबद सुनाया-

सबद-70

हक हलालूं हक साच कृष्णों, सुकृत अहल्यो न जाई।

भावार्थ- राजा के लिये तो विशेष रूप से हक की कमाई पर ही संतोष कर लेना सत्य के नजदीक पहुंचना है तथा प्रजा से जो कर रूप से धन लेता है, उसमें राजा का कोई हक नहीं होता, वह तो प्रजा की खून- पसीने की कमाई है। उसे तो प्रजा के हितार्थ ही लगाना चाहिये। अनाधिकार रूप से प्रजा का धन या अन्य किसी दूसरे राजा पर अधिकार करने की चेष्टा बेहक है। इसलिये अपनी मर्यादा सीमा में रहते हुए परिश्रम द्वारा जो धन प्राप्त होता है वही सच्चा है। जो सत्य के मार्ग से प्राप्त किया है। इस प्रकार से परिश्रम द्वारा किया हुआ सुकार्य व्यर्थ में नहीं जाता उसका फल अवश्यमेव प्राप्त होगा। देर हो सकती है किन्तु अन्धेर नहीं है।

भल बाहिलो भल बीजीलो, पवणा बाड़ बलाई।
जीव के काजै खड़ो जे खेती, तामै ले रखवालो रे भाई।

सुफल की प्राप्ति के लिये सर्वप्रथम खेती की जुताई, गुड़ाई, सफाई की जाती है तत्पश्चात् उसमें समय आने पर अच्छे बीज बोये जाते हैं तथा खेती की रक्षार्थ मजबूत कांटों की बाड़ चारों तरफ लगाई जाती है। उसी प्रकार से इस मानव जीवन रूपी खेती में भी यदि अच्छा फल चाहता है तो इस शरीर रूपी खेती में सर्वप्रथम ज्ञान धारण करने की

योग्यता धारण करनी होगी तथा योग्यता के लिये स्नान, शौच, सद्व्यवहार आदि गुणों को धारण करना होगा। जब शरीर शुद्ध हो जायेगा तब उसमें सद्ज्ञान रूपी बीज बोया जायेगा और बीज अंकुरित हो जाने के बाद उस ज्ञान के फल आनन्द की रक्षार्थ पवित्रता रूपी बाड़ चारों तरफ लगानी होगी जो सांसारिक मोह मायादि तूफानों से उड़ न सके। हे प्राणी! इस संसार से इस जीव की भलाई के लिये यह साधना रूपी खेती कर तथा खेती के रक्षार्थ एक रखवाला भी रखना होगा। वह तेरा स्वयं का मन ही हो सकता है क्योंकि वही खेती का कर्ता भी है। उसे ही रखवाला रखना होगा क्योंकि आगे कई विपत्ति आने वाली है।

दैतानी शैतानी फिरैला, तेरी मत मोरा चर जाई।
उनमन मनवां जीव जतन कर, मन राखिलो ठाई।

तुम्हारी खेती जब पकने की तैयारी होती है तो उसी समय ही कभी दिन या रात्रि में मौका पाकर स्वतन्त्र विचरण करने वाले दैत्य स्वरूप भैंसा और शैतान रूप सांड आकर तुम्हारी खेती को तहस-नहस कर सकते हैं। उसी प्रकार से ही इस साधना रूपी खेती को भी समाज में स्वच्छन्द विचरण करने वाले ये मदमस्त राक्षस शैतान दुष्ट स्वभाव वाले मानव कभी भी तुम्हारे सत्य ज्ञान मार्ग को नष्ट-भ्रष्ट कर सकते हैं तथा सावधान न रहने से तुम्हारी बुद्धि को मयूर रूपी अहंकार नष्ट कर देगा। इसलिये मन रूपी रखवाले को स्थिर सावधान रहना होगा क्योंकि यह रखवाला स्वयं ही तुम्हारा चंचल मन है। इसे उनमन स्थिर यानि एकाग्र होकर खेती की रक्षा करनी होगी। यह साधना जीव की भलाई के लिये ही करनी चाहिये तथा सच्ची खेती भी उसे ही कहना चाहिये जिससे जीव की भलाई हो।

जीव के काजै खड़ो ज खेती, वाय दवाय न जाई।
न तहां हिरणी न तहां हिरणा, न चीन्हों हरि आई।

अपने जीव की भलाई के लिये ही साधना रूपी खेती करें। जिससे वह सदा के लिये जन्म-मरण के चक्र से छूट सके किन्तु साधना एवं खेती के करते समय कुछ समस्याओं का भी ध्यान रखना परमावश्यक है। जैसे सर्वप्रथम तो खेती को उड़ाने व दबाने वाले हवा के भयंकर तूफान जो खेती को मूल से या तो मिट्टी के नीचे दबा देते हैं या उड़ाकर ले जाते हैं। उसी प्रकार साधना में भी आने वाले अनेक प्रकार के लोभ, मोह, काम, क्रोध आदि तूफान या तो उसे साधना से निवृत्त कर देते हैं या उसकी साधना को दबा देते हैं। इनसे सावधान रहना परमावश्यक है तथा अन्य और भी कई प्रमुख बाधाएं खेती करने वालों को आती है, वहां कभी हिरण-हिरणियां एवं गायें भैसें आदि जो जबरदस्ती से खेत में घुस जाती है और फसल को खा जाती है। किसान की तरह ही साधक होता है। वह भी यदि अपनी साधना की रक्षा नहीं कर सकेगा तो हिरण रूपी मन एवं हिरणियां रूपी मन की वासनाएँ जो अति चंचल है, वे साधना को नष्ट कर सकती है। वैसे तो मन स्वयं रखवाला है किन्तु बाड़ स्वयं ही खेत को खाने लग जाये तो और भी समस्या पैदा हो जाती है। उसी प्रकार से साधक को भी सूक्ष्म वासनाओं से समस्या अधिक पैदा हो जाती है तथा बुद्धि का नियंत्रण मन पर होना चाहिये था किन्तु बुद्धि कुशाग्र न होने से वह भी जबरदस्ती करने वाली गाय की तरह हो जाती है। जैसे सद्-असद् का विवेक नहीं रहता तो वह भी विचार शून्य होकर साधना में बाधा उत्पन्न करेगी।

न तहां मोरा न तहां मोरी, न ऊंदर चर जाई।

और भी अनेकों बाधाएं आती है। वहां खेती

को खाने वाले मयूर-मयूरी तथा चूहे भी रहते हैं। ये सभी खेती को उजाड़ने वाले हैं। किसान को इनसे भी सावधान रहना पड़ता है, तभी खेती तैयार होती है। ठीक उसी प्रकार से साधक को भी मयूर रूपी अहंकार एवं मयूरी अहंकार वृति, गर्व, मेरापन, रूपी मयूरनियों से सावधान रहना होगा। ये साधक द्वारा की गई सम्पूर्ण साधना पर कभी भी पानी फेर सकते हैं और दूसरे सबसे अधिक शत्रु चूहे होते हैं। उनसे बचाव तो अति कठिन है किन्तु बचाव करना भी जरूरी है। उसी प्रकार से साधक को अचेत रूपी चूहे कभी भी मन्दमति कर सकते हैं इसलिये सदा सचेत रहना चाहिये कि कहीं चूहे खेत में बिल तो नहीं कर रहे है। अर्थात् मैं कहीं अचेत अवस्था में पड़ा हुआ समय को व्यर्थ में तो नहीं गंवा रहा हूं। इस प्रकार से सदा जागृत होकर खेती व साधना की रक्षा करनी चाहिए। दूसरा अर्थ चूहे अर्थात् तर्क बुद्धि जो काटना ही जानती है वह कहीं नास्तिकता की ओर न ले जाये सावधान रहें।

कोई गुरु कर ज्ञानी तोड़त मोहा, तेरो मन रखवालो रे भाई।
जो आराध्यो राव युधिष्ठिर, सो आराधों रे भाई।

हे महलूखान एवं सांतल राव! यदि तुम विघ्न बाधाओं से बचना चाहते हो तो किसी ज्ञानी गुरु की शरण में जाओ, वह तुम्हारे मोह बन्धन को तोड़ देगा। जब तक आप लोग मोह के बन्धन में फंसे रहोगे तब तक तुम्हारी साधना कभी सफल नहीं हो सकेगी। जब गुरु के आशीर्वाद से मोह का बन्धन टूट जायेगा तब तुम्हारी खेती को चरने वाला यह चंचल मन भी उसी खेती का रक्षक हो जायेगा। जिस प्रकार से धर्मराज युधिष्ठिर ने राज्य करते हुए धर्म सत्य का पालन करते हुए राज्य रूपी खेती साधना की, वैसा ही आप लोग करो। आप भी तो राज्य करते हुए भी धर्मराज की पदवी प्राप्त कर सकते हो तथा तुम्हें इसके लिए प्रयत्नशील रहना चाहिए।

- साभार 'जंभसागर'

अमर ज्योति परिवार के सभी पाठकों व लेखकों
को बिश्नोई सभा, हिसार व 'अमर ज्योति' की ओर से

नववर्ष 2018 की हार्दिक शुभकामनाएँ।

सुख-समृद्धि धन धान्य बढ़े, मधुर बने जीवन संघर्ष,
सुख चैन रहे सभी दिलों में, गाएं सब मिल गीत सहर्ष।
हे प्रभु यही विनती हमारी, मंगलमय हो यह नववर्ष॥

सम्पादकीय

नववर्ष बने नव संकल्पों का नया सवेरा

समय एक अखण्ड धारा है, जो अबाध रूप से निरन्तर प्रवाहमान रहती है। इसे किसी कालखण्ड में बांटने से इसकी प्रवाहमानता पर कोई प्रभाव नहीं पड़ता है, जो इसकी धारा की शाश्वता का प्रबल प्रमाण है। फिर भी मनुष्य ने इसे अपनी सुविधानुसार बांटने का प्रयास किया है। दिन, मास, वर्ष, युग आदि मनुष्य के इसी प्रयास का प्रतिफल है। ये कालखण्ड हमारे जीवन में विशेष महत्त्व रखते हैं। ये हमारे लिए वे क्षण होते हैं जब हम रूककर कुछ चिन्तन करने को विवश होते हैं। वैसे तो मनुष्य एक चिंतनशील प्राणी है इसलिए हर समय चिंतन करता रहता है, परन्तु कुछ विशेष क्षणों में उसका चिंतन विशेष होता है। इस अवसर पर वह 'क्या खोया, क्या पाया और क्या पाना है' के बारे में विचार करता है।

नववर्ष, 2018 दहलीज पर खड़ा है, हम उसके स्वागत को आतुर हैं। पूरा विश्व इसके आगमन की खुशियों के जश्न में डूबने वाला है। तरह-तरह के आयोजन और पार्टियां पहले से ही तय हो चुकी हैं। विभिन्न संस्थाएं और पूरा मीडिया भारी शोरगुल्ला मचाने वाला है। नववर्ष के आगमन की बधाई देने को हम सब तत्पर हैं। नववर्ष के आगमन को लेकर औपचारिकताएं और दिखावा इस सीमा तक पहुंच चुका है कि इसका मूल संदेश 'चिंतन का क्षण' कहीं खो सा गया है। 'क्या पाया, क्या खोया' के बारे में सोचने को विश्राम ही नहीं है, हम दिखावे में इतना इतरा रहे हैं जैसे इस नये वर्ष को हमीं लेकर आए हैं।

वस्तुतः नववर्ष का स्वागत तभी होगा जब हम गत वर्ष की समीक्षा करेंगे कि बीते वर्ष में हमने क्या किया और हमारा कर्त्तव्य क्या था? मानव कल्याण और आत्मकल्याण के क्षेत्र में कितना उद्यम किया? ईर्ष्या-द्वेष को छोड़कर भाईचारे को कितना बढ़ावा दिया? परोपकार में कितना समय और अर्थ लगाया? पर्यावरण शुद्धि और रक्षा के लिए क्या किया? गत वर्ष में कौन-कौन सी अच्छाइयों से आलिंगन किया? कितने अंशों में उस पथ के पथिक बने जो गुरु जाम्भो जी ने हमें दिखाया था? नववर्ष का स्वागत करने के अधिकारी हम तभी बनेंगे जब हम इन यक्ष प्रश्नों के उत्तर अपने आपसे ले लेंगे।

यह भी सच है कि बीता हुआ समय कभी लौट नहीं सकता, समय का चक्र केवल आगे ही घूमना जानता है। अभिप्राय कि पूर्व में रही कमियों के बारे में केवल विचार करते रहने से ही कुछ होने वाला नहीं है। इसकी भरपाई यही है कि हम भविष्य में उन जाने-अनजाने में रही कमियों को दूर करने का संकल्प लें। संकल्प भी हर समय नहीं लिया जाता है, उसके लिए भी अवसर विशेष की आवश्यकता होती है, तो अवसर विशेष समाने है 'नववर्ष 2018' का आगाज। आओ गुरु महाराज को साक्षी मानकर संकल्प लें कि इस वर्ष में हम उसी समाज का निर्माण करके दिखाएंगे जिसकी परिकल्पना गुरु जम्भेश्वर जी ने की थी। नववर्ष की शुभकामनाओं सहित गुरु जम्भेश्वर भगवान से प्रार्थना कि वे हमें इतना सामर्थ्य दे कि हम अपने संकल्प पर खरा उतरें।

हरजी कृत साखी छन्दां की

मन को बूरो स्वभाव, इनके मते न चालिये।
ये जाणै बहुत उपाय, अनेक जतन कर पालिये।
अनेक जतन कर पालिये नै, झालिये गहि बांहि।
बाहर जातो आणिये नै, काया गढ़ के मांहि।
दश दिश चौकी राखिये नै, दुष्टि जाणे दाव।
निकस जावै पवन ज्यूं, मन को बूरो स्वभाव।
इनके मते न चालिये।1।

एक शृंगी रिखराज, तप करंतो महाबलि।
मन दीन्ही सिर मांय, मोहनी रूप लियो छली।
मोहनी रूप लीयो छली नै, कियो अन्त अधीन।
गह आयो ले गांव में, दर्शन दुनिया दीन।
सेवा स्मरण हरि कथा, भूल गयो ऋषिराज।
रातो सुख संसार में, एक शृंगी ऋषिराज।
तप करंतो महाबलि।2।

सुण मन का उपकार, रावण सूं रगड़ा करी।
छेद्या लछमण कुंवार, दश मस्तक लंकेशरी।
दश मस्तक लंकेशरी नै, छिन में दियो गुड़ाय।
मन का मारा मर गयो, महाबलि अंणराय।
रावण असुरा राजवी, लंका तणों दरबार।
रूठो रावण राम सूं, सुण मन का उपकार।
रावण सूं रगड़ा करी।3।

मन के बहुत मरोड़, जाय रूठो इन्द्र आप सूं।
तिरिया चौसठ करोड़, फंसियो गोतम वाम सूं।
फंसियो गोतम वाम सूं नै, फंस र लियो सराप।
छांटो लागो सुरपति, अजहु अजो लग पाप।
मन अण होणी करै, गिणै न ठोर कुठोर।
मन सूं कदै न धीजिये, मन के बहुत मरोड़।
जाय रूठो इन्द्र वाम सूं।4।

मन की क्या परतीत, ब्रह्मदेव सूं ना टल्यो।
लियो जगत गुरु जीत, रूप मोहणी कर छल्यो।
रूप मोहणी कर छल्यो नै, सही विसवा वीस।
सागी पुत्री सरस्वती नै, होय दीयो दुरशीश।
सुर नर मुनि जन देवता, सकल भया भयभीत।
जन हरजी की वीणती, मन की क्या परतीत।
ब्रह्मदेव सूं ना टल्यो।5।

भावार्थ- हरजी द्वारा वर्णित अपने ढ़ंग की इस निराली साखी में मन की चंचलता तथा उससे होने वाले अपराधों के बारे में उदाहरण सहित समझाया है।

मन का स्वभाव प्राय: अच्छा नहीं होता है। अपना भला चाहने वाले से यही कहना है कि मन के पीछे कभी नहीं चलें। यह मन बहुत ही पैंतराबाजी जानता है। यह अपनी कलाओं द्वारा रिझाने का प्रयत्न करें तब अनेक उपायों द्वारा इसे रोककर रखें। एक साधन जब कार्य न करे तो दूसरा साधन अपनाएं। मन की चंचलता अवश्य ही रोकिये, बाहर संसार में भटकते हुए मन की बांह पकड़कर स्थिर कीजिये। बाह्य विषयों से हटाकर मन को काया गढ़ के भीतर ही आत्मस्थ करें। दशों दरवाजों पर कड़ा पहरा रखना चाहिये। यह दुष्ट मन बहुत ही तरीके जानता है, न जाने कब कौन-सी चालाकी करके बाहर चला जाये। पवन की भांति अदृष्ट एवं वेगवान मन झट निकलकर चला जाता है, इसलिये मन के पीछे कभी न चलें।1।

एक शृंगि ऋषिराज वन में तपस्या करने में लीन थे। मन ने सिर पर चोट मारी, यानि बुद्धि को बदल दिया। मन ने ही मोहिनी रूप धारण करके छल किया। बुद्धि को मोहित कर डाला। ऋषि को अपने अधीन करके नगर में ले आया। दुनिया का दर्शन हुआ संसार के विषय भोगों का अनुभव किया और संसार के सुखों में रच-बस गया। हरि स्मरण सेवा कथा वेद पठन- पाठन सभी कुछ भूल गया। ऐसे मन ने शृंगी को नचाया था।2।

मन राजा का कार्य कलाप आगे और भी देखिये। इसी मन ने ही तो रावण से रगड़ा किया था। इसी मन ने ही अपराध करवाये थे। जिस कारण से लक्ष्मण कुमार ने लंकाधीश रावण के दस मस्तक काटे थे। रावण अकेला ही नहीं, रावण का सम्पूर्ण परिवार मन के मारे ही मर गया था। मन की वजह से ही रावण राम से रूठ गया था जिसका परिणाम सर्वनाश ही हुआ था। यह मन के ही उपकार थे अन्यथा रावण स्वयं विद्वान था। उन्हें सीता हरण करने की आवश्यकता ही नहीं थी। जो मन महाबलि रावण से भी टक्कर ले सकता है, तो सामान्य जन की तो बात ही क्या कहें।3।

मन के बहुत ही मरोड़ है यानि सदा ही टेढ़ा उल्टा ही चलता है। यह मन ही तो इन्द्र से रूठ गया था, जिस कारण से इन्द्र को भी नचा दिया था। जिस इन्द्र के यहां पर चौसठ करोड़ स्त्रियां रहती है, किन्तु उन्हें छोड़कर गौतम पत्नी अहिल्या के यहां जाकर फंस गया था। गौतम ने इन्द्र को शाप दिया था। उसी शाप कलंक को अब तक नहीं धो सका है, यह मन राजा अनहोनी भी कर बैठता है। ठोर-कुठोर, उचित-अनुचित कुछ भी नहीं देखता। मन से कभी परास्त न होवें तथा मन के बहकावे में आकर पीछे न चलें क्योंकि मन सरल साधु नहीं है। यह स्वयं इन्द्र से भी रूठ गया था और नाच नचा दिया था।4।

मन का क्या विश्वास किया जावे। यह तो स्वयं ब्रह्माजी से भी नहीं टला। उन्हें भी नचा दिया। जगतगुरु को भी मन ने हरा दिया। मोहिनी रूप धारण करके मन ने ही तो उपद्रव किया था। ब्रह्माजी मन के द्वारा छले गये। अपनी पुत्री सरस्वती के ऊपर भी कुदृष्टि डाल दी, यह मन की ही करतूत थी। एक क्षण के लिये ऐसा चमत्कार मन ने ब्रह्माजी को भी दिखा दिया था। इसी मन ने ही सुर नर मुनि देवता ऋषि आदि सभी को भयभीत कर दिया। हरजी विनती करते हुए कहते हैं कि मन का क्या विश्वास जो ब्रह्माजी से भी नहीं टला।5।

साभार- साखी भावार्थ प्रकाश

लोकमंगल का अनिवार्य तत्त्व 'अहिंसा' और गुरु जाम्भोजी

ईश्वर! सृष्टिकर्ता! सृष्टि के कल्याणार्थ हर पल, हर क्षण तत्पर। संसार में जब भी ईश्वर की आवश्यकता अनुभव की जाती है, वह शरीर धारणकर संसार में अवतरित होते हैं। इसी संदर्भ में गीता में भी कहा गया है- **"यदा यदा ही धर्मस्य ग्लानिर्भवति भारत। अभ्युत्थानम् धर्मस्य तदात्मानं सृजाम्यहम्।"**

गुरु जाम्भोजी भी इस सृष्टि में ईश्वर के अवतार थे। बारह करोड़ जीवों का उद्धार करने के लिए उन्होंने अवतार लिया था। ईश्वर ही हमें सद्मार्ग पर लाने का सदुपदेश देते हैं, जिससे सबका कल्याण हो। सबका कल्याण अर्थात् लोकमंगल। वह भी बिना किसी हिंसा के अर्थात् किसी को कोई चोट, दु:ख, पीड़ा, कष्ट पहुंचाए बिना। यह महान कार्य ईश्वर के द्वारा ही सम्भव है। वही अहिंसा का मार्ग बताकर लोकमंगल का कार्य करते हैं।

गुरु जाम्भोजी के सदुपदेश 120 सबदों के रूप में लिपिबद्ध हैं। इसके अलावा उनके बनाये उनतीस नियम भी हैं, जिनका अनुकरण कर श्रेष्ठ जीवन यापन किया जा सकता है। गुरु जाम्भोजी के बताये उनतीस नियमों में से एक नियम **"जीव दया पालणी"** है अर्थात् जीवों पर दया भाव रखते हुए उनका पालन-पोषण करें, क्योंकि सभी जीव अपना जीवन जीना चाहते हैं। इसलिये उनके जीवन में सहयोग कर, अहिंसा का मार्ग अपनाना चाहिए, न कि उनके जीवन को समाप्त करना चाहिए। **"अहिंसा परमो धर्म:।"** अहिंसा का पालन करना ही सर्वश्रेष्ठ धर्म है। यदि किसी को जीवन दे नहीं सकते, तो लेने का क्या अधिकार है? जीव-हिंसा अनाधिकार चेष्टा है, सबदवाणी के सबदों में गुरु जाम्भोजी ने अनेक बार जीव-हिंसा का खण्डन कर अहिंसा पर बल दिया है। सबदवाणी में अहिंसा के विषय में गुरु जाम्भोजी ने कहा- **"मोरै छुरी न धारूँ, लोह न सारूं, न हथियारूं"** अर्थात् मेरे पास कोई भी लोहे की धातु का बना हुआ तीक्ष्ण छुरी व तलवार आदि शस्त्र नहीं है। मैं सत्योपदेश के द्वारा ही करोड़ों मनुष्यों को बुरे मार्ग से हटाकर शुभ (मंगल) मार्ग पर लगाता हूँ। **"जिंही हाकणड़ी बलद जूं हाकै ना लोहे की आरूं"** कुछ लोग डंडे के आगे लोहे की कील लगाकर उससे बैलों को हांकते हैं, जो धर्म-विरुद्ध काम है क्योंकि बैलों के कील लगने से ख़ून निकल आता है, जो ठीक नहीं है। एक दूसरे अर्थ में गुरु जाम्भोजी कहते हैं कि मैं छोटी-सी लोहे की कील को भी शस्त्र के रूप में पास नहीं रखता, क्योंकि वाद-विवाद, मारना-पीटना मूर्खता का काम है। ज्ञानी व्यक्ति तो सत्योपदेश के द्वारा ही संसार का कल्याण करते हैं। यही अहिंसा का सबसे बड़ा उदाहरण है।

गुरु जाम्भोजी अहिंसा के बारे में आगे कहते है **"म्हे खोजी थापण होजी नाहीं"** मैं जिज्ञासु पुरुषों को खोजकर शुभ मार्ग पर लगाता हूँ तथा किसी प्रकार का दुराग्रह कभी नहीं करता, क्योंकि दुराग्रह वाणी की हिंसा का एक रूप है। गुरु जाम्भोजी मंगलपरक उपदेश देते हुए काजी और मुल्ला से कहते हैं- **"किणरी थरपी छाली रोसो किणरी गाडर गाई"** तुम लोग अन्यायपूर्वक गाय, भेड़, बकरी आदि जीवों की हत्या करते हैं, जो धर्म विरुद्ध है, क्योंकि कोई भी ऐसा व्यक्ति, जो अपनी आत्मा का कल्याण चाहता हो, ऐसा कार्य नहीं करता। कोई भी आप्त पुरुष जीवों को मारने की आज्ञा नहीं दे सकता। **"सूल चुभीजै करक दुहैली, तो है है जायो जीव न घाई"** जिस समय कांटा मनुष्य की देह में लगता है, तब बड़ी असहनीय वेदना होती है, फिर तुम तो उनकी देह से सिर को काटते हो, तब उनको कितना कष्ट होता होगा, ऐसा विचारकर कभी किसी शरीरधारी जीव की हत्या नहीं करनी चाहिए क्योंकि हिंसा करना उचित नहीं होता। अहिंसा का मार्ग अपनाना चाहिए। यही प्राणी-मात्र के लिए मंगलकारक है।

गुरु जाम्भोजी ने काजी और मुसलमानों को अहिंसा का पाठ पढ़ाते हुए फिर कहा- **"भाई नाऊँ बलद पियारो ताके गलै करद क्यूं सारो"** भाई से बढ़कर हित करने वाला बैल है, उसके गले पर छुरी क्यों चलाते हो? भाई मौके पर जवाब दे सकता है, किन्तु भोला-भाला बैल संकट की घड़ी में कभी जवाब नहीं देगा। **"बिन चीन्है खुदाय बिबरजत, केहा मुसलमानों"** तुम लोगो ने ईश्वर को तो पहचाना नहीं। उस ख़ुदा ने भी तो जीव-हत्या करना मना किया है। फिर भी जीव हत्या करते हो, तो तुम सच्चे मुसलमान कैसे हो सकते हो? क्योंकि कोई भी धर्म हिंसा की इज़ाज़त नहीं देता है। सभी अहिंसा की शिक्षा देते हैं। गुरु जाम्भोजी आगे फिर कहते हैं- **"काहे काजे गऊ विणासों तो करीम गऊ क्यों चारी"** अर्थात् तुम गाय की हत्या क्यों करते हो? यदि परमात्मा हिंसा को उचित मानते, तो कृष्ण भगवान के रूप में गऊओं को क्यों चराते तथा प्रेम से उनकी सेवा क्यों करते? **(काहे लीयों दूधूं दहियों, काहे लीयो घीयों महियो)** यदि तुमने परोपकारी पशुओं को मारना श्रेष्ठ समझ रखा है, तो उनका दूध, दही, घी तथा छाछ आदि, क्यों लेते हो? **(काहे लीयों हाडूं मांसू काहे लीयो रक्तुं रूहियो)** जब उन गौओं आदि का दूध, दही, घी आदि ग्रहण कर लिया तो गौ पालन- पोषण करने वाली माता के समान हुई, फिर तुम उनके हाड़, मांस, खून तथा जीवन को क्यों ग्रहण करते हो? **(बिसमिल्ला रहमान रहीम)** सभी जीवों पर दया करने वाले परमात्मा को अपना इष्ट देव समझो, ऐसा अहिंसा से ओत-प्रोत व्यक्तित्व गुरु जाम्भोजी का है।

गुरु जाम्भोजी अहिंसक बनने व हिंसा को रोकने पर बल देते हुए कहते हैं- **"सीने सरवर करो बन्दगी हक नमाज गुजारो"** सच्ची नमाज़ वही है जो हृदय में जीवों पर दया करने की भावना पैदा करती है। **(आप खुदायबन्द लेखो मांगे रे बिनही गुन्हें जीव क्यों मारो)** मृत्युपरान्त सृष्टिकर्त्ता स्वयं पाप-पुण्य, सत्य-असत्य का निर्णय पूछेंगे, तो वहाँ क्या उत्तर दोगे? तुम बिना अपराध वाले अनाथ परोपकारी गौ आदि जीवों की हत्या क्यों करते हो? **(थे तक जाणों तक पीड़ न जाणों बिन परचे वाद नमाज गुजारो)** तुम लोग केवल अपने पेट की पूर्ति के लिए पशुओं को मारना ही जानते हो। पशुओं को मरते समय कितनी पीड़ा होती है और कितना उसका महापाप लगता है। महापाप जो जीव-हिंसा है, उसको छोड़ते नहीं और नमाज़ पढ़कर परमात्मा को प्रसन्न करना चाहते हो **(तिसके गले करद क्यों सारो थे पढ़ सुण रहिया खाली)** तुम परोपकारी पशु के गले पर छुरी क्यों रखते हो? तुम कुरान आदि शास्त्रों को पढ़कर भी नास्तिक और पापी ही रहे। **"कारण खोटा करतब हीणा थारी खाली पड़ी नमाजों"** तुम्हारा अन्त:करण हिंसा से मलिन हो गया है। जब तक इन दुष्कर्मों का परित्याग नहीं करोगे, तब तक तुम्हारा नमाज़ पढ़ना व्यर्थ है **(किहिं ओजूं तुम धोवो आप, किहिं ओजूं तुम खण्डा पाप)**। इस प्रकार से, जीव-हत्या करते हुए फिर आप लोग किस प्रकार से अपने पापों का नाश करोगे।

इस प्रकार, गुरु जाम्भोजी ने बहुत से उपदेशों के द्वारा सबको हिंसा का मार्ग छोड़कर, अहिंसा का मार्ग अपनाने को कहा। रामायण, योगदर्शन, पुराणों में भी लिखा है कि व्यक्ति पूर्णत: अहिंसक हो जाए, तो साक्षात् विरोधी जो जीव है, उनमें भी अहिंसा की भावना आ जाती है। यदि आप सच्चे अहिंसक हो जाएँ तो, आपके पास साँप और नेवले भी साथ-साथ आ जाएँगे, वे भी अपना परस्पर विरोध छोड़ देंगे, परस्पर शाश्वत विरोध वाले बाघ और हिरण एक साथ ऋषियों के आश्रम में रहते थे। कोई किसी को परेशान नहीं करता था। गुरु जाम्भोजी पूर्णत: लोकमंगल के साधक थे।

-डॉ. छाया रानी बिश्नोई, प्रवक्ता (हिन्दी)
दयानन्द आर्य कन्या डिग्री कॉलेज
मुरादाबाद (उ.प्र.) फोन: 0591-2451400

आदि सबद अनाहद वाणी

नृप मालदेव आविया, देखण गुरु प्रताप।
मूलो पुरोहित संग है, कछु हेत कछु दाप॥
पृथ्वीपति पूछत भयो, हमें बतावो भेव।
आदि जु पहले कूंण भयो, तां नहीं जांणत वेद॥

लोहावट के जंगल (साथरी) में जोधपुर नरेश के राजकुमार मालदेव का गुरु जाम्भोजी से मिलन के लिए आगमन हुआ। साथ में मूला पुरोहित भी था। मालदेव जाम्भोजी से कुछ प्रेमभाव रखता था तथा कुछ दबाव बनाने के लिए अपने पद प्रतिष्ठा के अहंकार की पुष्टि के लिए आया था। मालदेव ने आकर पूछा कि आप हमें यह भेद बतलावो कि सृष्टि से पूर्व कौन था? जिस बात को वेद भी नहीं जानते हैं वही बात आप हमें बतलावें।

गुरुदेव ने सबद नं. 93 कहा-

आद सबद अनाहद वाणी, चबदै भवण रहया छल पाणी।
जिहिं पांणी से इण्ड उपन्ना, उपन्ना ब्रह्मा रुद्र मुरारी॥93॥

आदि में शब्द ब्रह्म रूप ही था। वह शब्द ही अनहद ध्वनि के रूप में प्रगट हुआ जिसको ओम नाम भी कहा जाता है। हमारे द्वारा उच्चारित की गयी वाणी हद- यानि सीमित है। किन्तु नादवाणी अनहद है। आकाश की भांति सर्वत्र व्यापक है। वह शब्द आकाश में व्यापक है उसी को गुरु जाम्भोजी ने प्रथम शब्दोच्चारण करते हुए है। कहा है- 'नादे वेदे' प्रथम नाद नित्य है। वही नाद ही ऋषियों के मुख से उच्चारित होने से वेद बन जाता है। इसलिए ही तो गुरुदेव द्वारा कही गयी सबदवाणी वेद है। शब्द तो परब्रह्म ही था। गुरु जाम्भोजी के मुख से शब्द ब्रह्म का उच्चारण होने से वाणी वेद हो जाती है। यही सबदवाणी है, इसलिए सबद नं. 29 में कहा है।

"गुरु के शब्द असंख्य प्रबोधी खार समंद परीलो"।

गुरु मंत्र में कहा है- **'ओम शब्द गुरु सुरति चेला'** अर्थात् ओम शब्द ही गुरु है और श्रवणकर्ता सुरति ही चेला है।

ओम शब्द सोहं आप अन्तर जपै अजप्या जाप॥

आदि में शब्द ही था वह अनहद असीम वाणी के रूप में ही था।

तद होता एक निरंजण शिंभु 'कै होता धन्धु कारूं'॥4॥
अकल रूप मनसा उपरा जी, तामां पांच तत्व होय राजी॥
आकाश वायु तेज जल धरणी, तामां सकल सृष्टि की करणी।

ईश्वरीय इच्छा हुई कि 'एकोऽहं बहुस्याम प्रजायेय' तदैक्षत वह शब्द ब्रह्म एक ही था। उसी एक से अनेक हो जाऊं प्रजा के रूप में 'पुनः परमाणु रूप से आकाश वायु तेज जल पृथ्वी की उत्पत्ति हुई। चौदह भवनों में जलाकार ही था। उसी जल के सार तत्व से अण्डे की उत्पत्ति हुई। वही जगत का सार तत्व रूप विष्णु प्रगट हुआ। उसी विष्णु की नाभि कमल से ब्रह्मा की उत्पत्ति हुई। वही जगत का सार तत्व रूप विष्णु प्रगट हुआ। उसी विष्णु की नाभिकमल से ब्रह्मा की उत्पत्ति होती है। एक ही सत्ता तीन रूप में ब्रह्मा, विष्णु, महेश रूप में विभक्त होकर संसार की उत्पत्ति, स्थिति और संहारकर्त्ता भी हो जाती है। इसलिए गुरुदेव ने कहा है कि **'विष्णु-विष्णु तूं भण रे प्राणी'**। हमारा इस समय गहरा सम्बन्ध विष्णु से है क्योंकि वही पालन-पोषणकर्ता सत्वगुणी है। पुनः राव मालदेव ने पूछा-

दोहा

राव संग मेलो कियो, चल्यो जोधपुर नाथ।
सनमुख देव ने देख के, हिरदै आई शांत।
अर्ज करी कर जोड़ के, प्रश्न राव मन मांय।
आदि पुरुष अपनी कहो, किते एक नांव धराय॥

जोधपुर राव मालदेव ने अपने साथ बहुत सारे पुरोहित सेवक ठाकुर आदि विद्वानों को लेकर जोधपुर से प्रस्थान किया था। लोहावट की साथरी पर जाम्भोजी का दर्शन करके अति प्रसन्न हुआ था और कहने लगा कि हे देव आपके कितने नाम, रूप, स्थान है? गुरु जाम्भोजी ने शब्द नं. 94 सुनाया- **सहंस्र नाम सांई भल शिंभु, म्हे उपन्ना आदि मुरारी**।

उस शब्द ब्रह्म ओम नाम से आदि अनादि कहा गया। भगवान विष्णु को अनेक सहस्र नामों से जाना जाता है। वह सांई-सर्वत्र व्यापक स्वयंभू रूप से है। उसके कोई माता-पिता आदि कुटुम्ब कबीलो नहीं है। वह धर्म रक्षार्थ अनेक रूप रूपाय विष्णवे प्रभविष्णवै अनेक रूप से सर्वत्र विद्यमान रहता है। **'जहां चिह्नो तहां पायो'**। मुर-अरि-मुर नाम के दैत्य को मारने वाले मुरारी विष्णु कहे जाते हैं। पूर्व में छत्तीस युग शून्य में ही व्यतीत हो गये। सतयुग में सृष्टि का शुभारंभ हुआ है। सृष्टि के उत्पत्तिकर्ता, संचालनकर्ता एवं संहारकर्ता रूप में ब्रह्मा, विष्णु एवं महेश के रूप में एक ही सत्ता तीन रूप में विभक्त हुई है। सूर्य-चन्द्र ये दोनों ज्योति स्वरूप परमात्मा की दो आंखें

हैं। एक तीसरी आंख अमावस्या भी है। जो सूर्य-चन्द्र के अदर्शन अवस्था में देखती है। श्वास के द्वारा ऊर्जा शक्ति यानि जीवनी शक्ति ग्रहण करने के लिए पवन तथा आकाश प्रस्तुत किए है। जीवन का मूल आधार जल तथा पृथ्वी को भी उत्पन्न किया है। देव, दानव, मानव ये तीन प्रकार की सृष्टि का सृजन भी किया है। चौरासी लाख जीव योनी की सृजना भी की है।

गुरुदेव कहते हैं कि जब सृष्टि प्रलय होने जा रही थी तब हमने मच्छ का रूप धारण किया था और सत्यव्रत राजा को सचेत किया था। बीजों की रक्षा करने का उपाय बताया था ताकि पुनः सृष्टि की सृजना की जा सके। जब हमने कछुवे का रूप धारण किया था क्योंकि देव-दानवों द्वारा समुद्र मंथन के समय मथानी जल में डूबने लगी थी तब कछुवे का रूप धारण करके अपनी पीठ के ऊपर मथानी धारण की थी। देवताओं के कार्य को सम्पन्न करवाया था तथा उनके अहंकार को मिटाया था। गुरुदेव कहते हैं कि जब हिरण्याक्ष ने धरती को जल में डुबा दिया था। तब भी मैंने वराह रूप धारण करके पृथ्वी को अपनी दाढ के ऊपर धारण किया था और सभी की आधार रूपी धरती को जल से निकाल करके सभी के बसने तथा अन्न उपजाने हेतु सुलभ की थी। नृसिंह रूप धारण करके हिरण्यकश्यपु को मारा था और शरणागत भक्त प्रह्लाद की रक्षा की थी। ये चार अवतार सतयुग में हुए थे।

अब आगे बावन रूप धारण करके प्रह्लाद के पौत्र राजा बली को सचेत किया था। यज्ञादि साधनों द्वारा अनुचित कार्य स्वर्ग राज्य की प्राप्ति के लिए प्रयत्नशील था। उसे सचेत करते हुए तीन पग से सम्पूर्ण सृष्टि को नाप लिया था उसके लिए याचक भी बनना पड़ा था। देव गुरु वृहस्पति ही बावन के रूप में अवतरित होकर आये थे। गुरुपद धारी बावन भगवान याचना करते हैं तो अपने पद प्रतिष्ठा से गिर जाते हैं, इसलिए कहा है- **आये थे हरि बलि छालन को हार गये हरि आप। चार महीने तापसी राजा बलि के द्वार। जांचण आयो नर हरि॥**

परशुराम के रूप में दैत्य गुरु शुक्र ही अवतार लेकर आते हैं और सम्पूर्ण कला कौशल से संयुक्त परशुराम जी ने उद्दण्ड क्षत्रियों का संहार किया। परशुराम जी के रूप में क्षत्रिय समाज को भयभीत करके साध्य बनाया। उन्हें साधक बनाकर सद्मार्ग के अनुगामी बनाया। सूर्य अवतार श्रीराम ने रावण आदि राक्षसों का विनाश किया और सीता के सर्वस्व पति के रूप में मर्यादा का पालन किया। अपने शिर पर राजमुकुट से सुशोभित हुए ये तीन अवतार त्रेतायुग में हुए थे।

द्वापर युग में गुरुदेव कहते हैं कि मैंने कृष्ण के रूप में अवतार धारण किया। चन्द्र अवतार श्रीकृष्ण सोलह कला से संयुक्त होकर गाय चराई, बंसी बजाई, धरती पर उत्पन्न अनेक राक्षसों का वध भी किया था। कालीया नाग के नाथ डाली, उसे अन्यत्र जाने का आदेश दिया। इस प्रकार से अनेक राक्षसों का विनाश किया था। बुद्ध रूप धारण करके गुरुदेव कहते हैं कि मैं गया जी में रहा था, वहीं पर ज्ञान की प्राप्ति हुई थी। उस समय प्रचलित अनेक पाखण्डों का खंडन किया था। मुर नामक दैत्य को सही मार्ग का अनुयायी बनाया था। बौद्ध पंथ चलाया मार्ग दिखाया। इस प्रकार से बुद्ध अवतार यानि ज्ञानावतार भगवान बुद्ध रूप में जाम्भोजी कहते हैं कि मैंने ही बुद्ध अवतार धारण किया था। इस प्रकार से नौ अवतार के रूप नौ बार हमारी ही विजय हुई थी। कृष्ण और बुद्ध ये दो अवतार द्वापर युग में हुए थे।

इन नौ अवतारों द्वारा जो कार्य नहीं हो पाये थे, कुछ अवशेष रह गये थे। उन्हें पूर्ण करने के लिए मैं इस कलयुग में आप अपरंपार रूप से आया हूँ। जाम्भा गोरख अपार गुरु रूप में हम आये हैं किन्तु काजी मुल्ला पढ़े-लिखे पंडित हमारी निंदा करते हैं। यदि आप लोग दोज़ख-नरक-दुःख छोड़कर स्वर्ग-सुख, भिस्त चाहते हैं तो हमारा कहा हुआ करो, निश्चय ही स्वर्ग, मोक्ष की प्राप्ति सहज ही में हो जायेगी।

'नव अवतार नमो नारायण' को नमन करे। सिर झुकाएं जिससे अहंकार गिर पड़े और ज्ञानामृत का प्रवेश हो सके। आकाश तत्व बृहस्पति गुरु रूप जाम्भोजी हैं जो सबदवाणी के उच्चारणकर्ता है। वह शब्द शून्य आकाश से प्रगट होकर जाम्भोजी के मुख से उच्चरित होने से सबदवाणी हो जाती है। सस्वर सबदवाणी का उच्चारण करे गुरु बृहस्पति-जाम्भोजी सदैव सबदवाणी के रूप से अवतरित होकर आपको प्रसन्नचित करते रहेंगे।

मेरा शब्द खोजो ज्यूं शब्दे शब्द समाहि॥14॥

गुरु का शब्द ज्यूं बोलो झीणी वाणी, जिहिका दूरा हुता दूर सुणि जै,
सो शब्द गुणात्मक, गुणासारू, बले अपारू॥

-आचार्य कृष्णानन्द
अध्यक्ष, जाम्भाणी साहित्य अकादमी
मो.: 9897390866

नववर्ष और हम

नववर्ष के आते ही
प्रसन्न हो गए
उत्साहित हो गए हम,
उमंगें भरने लगे
स्वप्नों में तैरने लगे
कल्पनाओं के पंख उगे
आशाओं के दीप सजे,
खुशियों का आगोश
हमें अति भाया
प्रतिवर्ष आने वाला
बहार बनके आया,
गत वर्ष की भांति ही
बधाइयां लाया।
किन्तु-
हम तो वहीं हैं
जहां कल थे, खड़े हैं आज भी वहीं पर
समय बदल गया
कैलेण्डर बदल गया,
किन्तु हम नहीं बदले।
क्या हमने नववर्ष को
बधाई पत्र भेजने का ही
साधन माना है
भेजकर उस पर ग्रीटिंग
कृतिश्री हो जाना है,
नहीं! कभी नहीं!!
मात्र बधाई भेजने से
नववर्ष नहीं हो सकता
हैपी न्यू ईयर कहने से खुशियां
नहीं आ सकतीं।
हमें भी नया बनना होगा
नया भाव जगाना होगा
समाज व देश में नूतन आयामों को
सजाना होगा,
उसमें व्याप्त विसंगतियों पर
अंकुश लगाना होगा।
प्रश्न चाहे जन का हो
समाज या राष्ट्र का,
सभी के प्रति हमें-
सेवा भाव से युक्त
समर्पण का भाव लाना होगा।
सेवा शब्द को सार्थक करना होगा
तभी निर्भीकता से कहने के
अधिकारी होंगे हम,
विश्व जनमानस के समक्ष
हैपी न्यू ईयर।

-शशांक मिश्र भारती

स्वागत नववर्ष

उम्मीदों का दीप जलाये वर्ष नया,
आनेवाला है, स्वागत हम करते हैं।
उथल-पुथल से भरा हुआ यह बीता साल,
जाने वाला है सलाम हम करते हैं॥
भारत करवट बदल रहा है, बदलेगा,
जंजीरों की कुछ कड़ियां हैं टूट रहीं।
परिवर्तन का दौर चला है धरती पर,
दीवारों से परत रूढ़ि की छूट रही॥
सागर का यह ज्वार स्नेह की बस्ती को,
बहा न ले जाये इससे हम डरते हैं।
उम्मीदों का दीप जलाये वर्ष नया,
आने वाला है, स्वागत हम करते हैं॥
खिली रहे अधरों की लाली जन-जन की,
रहे न कोई भूखा, सबका उदर भरे।
तन-मन-जीवन रहे उमंगों से भरपूर,
इन्द्रलोक नीचे देखे तो जलन करे॥
प्रकृति हंसे, जीवन भी नया सिंगार करे,
मिल-जुलकर ऐसा प्रयास कुछ करते हैं।
उम्मीदों का दीप जलाये वर्ष नया,
आने वाला है, स्वागत हम करते हैं॥

-अनिल पाण्डेय, चण्डीगढ़

ये नववर्ष हमें स्वीकार नहीं

ये नव वर्ष हमें स्वीकार नहीं,
है अपना ये त्यौहार नहीं।
है अपनी ये तो रीत नहीं,
है अपना ये व्यवहार नहीं॥
धरा ठिठुरती है सर्दी से,
आकाश में कोहरा गहरा है।
बाग बाजारों की सरहद पर,
सर्द हवा का पहरा है॥
सूना है प्रकृति का आँगन,
कुछ रंग नहीं, उमंग नहीं।
हर कोई है घर में दुबका हुआ,
नव वर्ष का ये कोई ढंग नहीं॥
चंद मास अभी इंतजार करो,
निज मन में तनिक विचार करो।
नये साल नया कुछ हो तो सही,
क्यों नकल में सारी अक्ल बही॥
उल्लास मंद है जन-मन का,
आयी है अभी बहार नहीं।
ये नव वर्ष हमें स्वीकार नहीं,
है अपना ये त्यौहार नहीं॥
ये धुंध कुहासा छंटने दो,
रातों का राज्य सिमटने दो।
प्रकृति का रूप निखरने दो,
फागुन का रंग बिखरने दो॥
प्रकृति दुल्हन का रूप धर,
जब स्नेह सुधा बरसायेगी।
शस्य श्यामला धरती माता,
घर-घर खुशहाली लायेगी॥
तब चैत्र शुक्ल की प्रथम तिथि,
नव वर्ष मनाया जायेगा।
आर्यावृत की पुण्य भूमि पर,
जय गान सुनाया जायेगा॥
युक्ति प्रमाण से स्वयंसिद्ध,
नव वर्ष हमारा हो प्रसिद्ध।
आर्यों की कीर्ति सदा-सदा,
नव वर्ष चैत्र शुक्ल प्रतिपदा॥
अनमोल विरासत के धनिकों को,
चाहिये कोई उधार नहीं।
ये नव वर्ष हमें स्वीकार नहीं,
है अपना ये त्यौहार नहीं॥
है अपनी ये तो रीत नहीं,
है अपना ये त्यौहार नहीं॥

-राष्ट्रकवि रामधारी सिंह 'दिनकर'

त्रिताप हरो जम्भेश्वर

मरुधरती में इक रूंख उगा था,
सत्य-सनातन।
वेद-विहित सद-ज्ञान लिए,
पहुंचे जन-जन तक।
वे परम-गुरु थे पूर्ण, परमेश्वर पथ के वाहक।
'गुरु आप संतोखी, अवरां पोखी', के युग-गायक।
उन्नायक गुरु में लेशमात्र कोई इच्छा नह होती।
मानवता कल्याण हेतु प्रकट वह ज्योति।
संसार-सागरी प्राणी मात्र उनकी दृष्टि में,
उनके हित-पोषण ही आये, परम-गुरु सृष्टि में।
गुरु की झीणी बाणी जब उतरे हिरदय में,
निर्मलता का सागर लहराता तब दिस-दिस में।
निर्मल अरू दिव्य बाणी की वह सरिता,
लहराती बहुत समय तक,
बहुत दूर तक।
अतल-गंभीरी वह बाणी,बहुत दूर से,
मन हिरदय को करती निर्मल।
शीतलता के पावन-झरने झरते झर-झर।
गुरु के सबद असंख्य प्रबोधी,
जिसने नह जाना मारग को,
जिसने नह जाना तारक को।
'जइया गुरु न चीन्हो', 'तइया सींचा न मूळू'।
वह भटकत है जगत-जाळ में,
जन्म-मृत्यु बंधन विकराळ में।
इसीलिए हे मानव! नुगारापण छोडो,
अपने मन को अविचल मोड़ो।
स्वर्ग जाएंगे सब ही सुगरे। भटकेंगे भवसागर नुगरे।
'नुगरा के मन भयो अंधेरो, सुगरा सूर उगाणों।'
जो जगती में पथ पाना है, तो निज को पहचानो।
मानो गुरु की बाणी को, घट-घट अपने को जानो।
वह परम-तत्व विष्णु ही, व्याप्त है पिंड-ब्रह्मांडां।
अघट बना घट-घट में, व्याप्त है खंड-प्रखंडां।
नह उसकी रूप अरू रेखा, नह उसके चरण-चिन्ह है।
नह उसका निश्चित पथ है, वह तो व्याप्त घट-घट है।
'बाहर भीतर सर्व निरंतर, जहां चीन्हो तहां सोई।'
'अंजन मांहि निरंजन आछै।', जपो विष्णु घर-रोही।
जिसमें नह कूड़ कपट है, जिसका पथ सादा है।
उसको ही अलख मिलेगा, बाकी कीचड़-कादा है।
'अड़सठ तीरथ हिरदय भीतर बाहर सब लोका चारूं।
गुरु मुख विरला ही नहावै ,उस मानुष पर सब वारूं।'
जैसे पार कराती सागर, इक नन्ही सी नौका।
इसी तरह ही परम तत्व वह, नाश करे भव झोंका।
यह धरती, आकाश, दिशाएं, जल, तेज, काल जिसके हैं,
हम परम तत्व को पूजें, ये झींणै-जाल जिसके हैं।
कल्याण सुनें इन कानों, कल्याण दृष्टि से देखें।
यह काया जिसने दी है, उसके ही पथ को पेखें।
किसी से न कुछ भी मांगें, इससे आभा घटती है।
मांगो उस परम तत्व से, जिसकी माया जगती है।
सद्बुद्धि दे हे सांई! हम सद्पथ सदा चलें रे!
हम तेरे ही गुण गाएं, मानुष हम बनें भले रे।
हम जीव-मात्र को पोखें, बैठें जिस रूंख तले रे!
उसके रक्षण में होमें, अपनी यह देह भले रे!
हरियल रूंखों की धरती, ये पेड़-पंखेरूं भाई।
इसके कारण यह काया, है कण-कण में वह सांई।
इस मृत्यु-लोक में आकर, मृत्यु से मत घबराओ।
इस नाशवान जगती में, सद्कर्मों से जुड़ जाओ।
मत बैठो कल भरोसे, यह कभी नहीं कल आता।
पर जो पथ पर चल पड़ता, वह मानुष मंजिल पाता।
जो काम करे प्रारंभ, समझलो आधा किया अभी से।
जिस पथ पर चला आदमी, भय भागा उसी जमीं से।
उस साँवरिये के घर में , लेखा है सत-करमों का।
उसकी यह खुली दिशाएं, मेटे लेखा-भरमों का।
दिश-दिश के पवन-झकोरे, मधु की बरसे बरसातें।
मधु बरसाती सूरज किरणें, मधु ही बरसाती रातें।
नदियों में मधु की लहरें, लिपटा मधु में मरु कण-कण।
ये रूंख पेड़ मधु लिपटे, गुरु कृपा मधुमय जीवन-जन।
इस मृत्यु-लोक में साथी! गुरु परम तत्व बतलाया।
सद्कर्मों से जुड़ जाओ, गुरु इसीलिए जग आया।
गुरु कृपा बरसती है जब, अज्ञान जाल नासत है।
मन आतम जोत प्रकासे, भव भव के भय भागत है।
त्रिताप हरो जम्भेश्वर! मैं पथ तेरा अपनाया।
मेरे आतम परकासो, मैं गुण तेरा ही गाया॥

-डॉ. आईदान सिंह भाटी
जोधपुर, राजस्थान

संत वील्होजी के काव्य में लोकमंगल

संत वील्होजी के काव्य में लोक-कल्याण का भाव है। साहित्य का मूल उद्देश्य लोक-कल्याण ही है तथा इसी के द्वारा ही साहित्य सार्थकता प्राप्त करता है। यहाँ यह जरूरी हो जाता है कि हम सर्वप्रथम लोक-कल्याण के स्वरूप का विश्लेषण करें। लोक-कल्याण का अर्थ स्पष्ट करते हुए मानव-मूल्य-परक शब्दावली के विश्वकोष में लिखा है कि "लोक दर्शन धातु से घञ् प्रत्यय लगने से बना है। लोक कल्याण का अर्थ है 'लोक का कल्याण'। यह सामाजिक अर्थ हैं इसके प्रथम पद 'लोक' के अनेक अर्थ हैं जैसे वीर लोक, सात लोक, चौदह लोक, दिशा, निवास स्थान, प्राप्त, भू-भाग, विश्व, समाज, सांसारिक- व्यवहार, दृश्य आदि। 'लोक-कल्याण' में लोक का अर्थ उपर्युक्त कोष प्राप्त अर्थों में सम्पूर्ण मानव समाज और यहाँ तक कि जीव समाज में भी लिया जाता है, इस प्रकार लोक सबका पर्याय है। 'कल्याण' शब्द भी कोष में अनेकार्थी है। इसके प्रमुख अर्थ है-मंगल, सुख- सौभाग्य, भलाई, अभ्युदय, सोना, स्वर्ग, शुभ कार्य, एक राग आदि। 'लोक-कल्याण' में प्रयुक्त 'कल्याण' से आशय सोना, स्वर्ग और राग विशेष से कदापि नहीं है। यहाँ शब्द 'भलाई' के अर्थ में प्रयुक्त हुआ है। मंगल आदि अन्य अर्थ भी भलाई के ही पर्याय हैं। अत: सामासिक शब्द-रचना 'लोक-कल्याण' का मुख्य अर्थ 'सबकी भलाई' है। यहाँ भलाई का विचार या कार्य करते हुए 'आत्म' या 'स्व' का भाव तिरोहित हो जाता है और उसके स्थान पर 'सर्व' की सत्ता प्रतिष्ठित हो जाती है। 'सर्वे भवन्तु सुखिन:' का सर्वाधिक विस्तृत अर्थ शब्द 'लोक-कल्याण' में समाहित है। यहाँ अणु से परमाणु तक, जड़ से चेतन तक, राजा से रंक तक, हाथी से चींटी तक और आगे जाकर वनस्पतियों तक के अभ्युदय का सद्भाव स्पष्टत: प्रकट है। 'केवल अपने देशवासियों का ही हित चिन्तन करना लोक कल्याण नहीं कहा जा सकता, 'लोक-कल्याण' का भाव निज और पर के संकीर्ण विचार से परे है, जिनकी दृष्टि उदार है और जो सबको अपना समझते हैं, वे ही लोग लोक-कल्याण की बात कर सकते हैं- इन प्रयोगों से लोक-कल्याण का मुख्य अर्थ सबकी भलाई के रूप में ही स्पष्ट होता है।

इस प्रकार लोक-कल्याण का अर्थ सबकी भलाई से है। साहित्य सबकी भलाई को लेकर संकल्पित होता है। जब हम संत वील्होजी के काव्य में लोक-कल्याण पर विचार करते हैं, तो पाते हैं कि उन्होंने अपने उपदेशों द्वारा सबके कल्याण की कामना की है। वे लिखते हैं कि-

उघाड़ै नै पांगरन दियो, जाणिं पारब्रह्म उढ़ाइयौ।
निरधन नै धन दियो, जाणि आप मानि भयौ॥
आदू अण न मेटिये, लायक मेटि न जाइये।
वील्ह कहै भगवत को, इनि विधि भलो मनाइये॥

भूखे को भोजन दिया मानो भगवान को खिलाया, प्यासे को जल पिलाया मानो भगवान को पिलाया, नग्न को वस्त्र दिया मानो परब्रह्म को उढ़ाया, निर्धन को धन दिया मानो भगवान को अर्पण किया, पुरानी मर्यादा को नष्ट नहीं करना चाहिए और दिए वचन को भंग नहीं करना चाहिए। कवि वील्होजी कहते हैं कि भगवान इन बातों से प्रसन्न होते हैं-

नर चिंत कुछ और, दई कछु और बनावै।
करण मतै जहां महल, दई तहां धूल उड़ावै।
होन करे धनवंत, दई दालित लिख दीनो।
देव भरोसो राखिये, नर चिंते पूरो खरो।
वील्ह कहै विसन जपो, भाग लिख्यो देसी परो॥

मनुष्य सोचता कुछ और है, ईश्वर बनाता कुछ और है। जहाँ महल की इच्छा होती है, ईश्वर वहाँ धूल उड़ाता है। निर्धन को धनवान व धनवान को दरिद्र बना देता है, जो ईश्वर करता है वही होता है, जो इच्छा करते हैं, वे मूढ़ हैं। ईश्वर पर भरोसा रखो व चिन्ता न करो। कवि वील्होजी कहते हैं कि विष्णु भगवान का स्मरण करो, जो भाग्य में लिखी है वही तुम्हें मिलेगा।

संत वील्होजी ने इस प्रकार समाज का मार्गदर्शन किया है और उसके कल्याण का मार्ग प्रशस्त किया है। इन्होंने प्रत्यक्ष देखा था कि समाज में नशा एक बुराई की तरह व्याप्त है, इसलिए इन्होंने उससे बचने का मार्ग

बतलाया। इन्होंने मद्य, माँस, भाँग आदि से होने वाले दुष्प्रभाव की भी चर्चा की। उनका मानना था कि जो धर्म करते हैं और विष्णु के भक्त हैं, उन्हीं के साथ रहना चाहिए। बाकी पापियों से बचने का प्रयास करना चाहिए। मनुष्य अपने पाप के कारण ही दु:ख का भोग करता है और संसार में भटकता रहता हैं इनके अनुसार मनुष्य को कई चीजों से बचना चाहिए जो इस प्रकार हैं-

खोज उलांडे पाप, पाप होय संग चालंतां।
मुख देखंतां पाप, पाप होय नांव लीयतां।
जीम्या साथे अगति, होति जा भीटयां लागै।
भेट गुर वायक, ग्यानं परमोध्य न लागै।
बांह्म कुमल पीवै बुध्यनास, कुचल चाल चाले अैसी।
वील्ह कहै जी ग्यानियौ, तांह दीन्हो कित लाभ्यसी।

जो पापी हैं उनके साथ चलने से भी पाप लगता है। उनका मुख देखने से और नाम लेने से पाप होता है। ऐसे लोगों के साथ खाना खाने से अधोगति एवं छूने से पाप लगता है, जो गुरु के वचनों को नहीं मानते हैं और ज्ञान की शिक्षा जिनको नहीं लगती है। जो नशा करते हैं, उनकी बुद्धि का ही नाश होता है, जो गलत राहों पर चलते हैं, कवि वील्होजी कहते हैं कि हे ज्ञानियों, उन कुपात्रों को दिया हुआ दान हमें कहाँ मिलेगा।

पिसौ गऊ गालि सार, सिंघ स्यावज पोखीजी।
जिसौ हंस हलियाय, विटल बावस भख दीजै।
जिसौ चंदन करि हेव, वाहि धतुरै कीजै।
जिसौ सुरह बहि दूध, दूध विसहर पाईजै।
जिसौ कुपातां दान दे, जलम गुमावै बरि पर।
वील्ह कहै विचार वीन्य, संपति अगति न जांहि नर॥

जो गाय को काटकर सिंह और सियारों को खिलाते हैं, जो हंस की हत्या करके कौओं को खिलाते हैं, जो चंदन को काटकर धतूरे के चारों ओर बाड़ करते हैं, जो गाय का दूध निकालकर सर्प को पिलाते हैं, जो कुपात्रों को दान देते हैं, वे अपना जन्म नष्ट करते हैं। कवि वील्होजी का कहना है कि ऐसे विचार-हीन व्यक्ति सद्गति को प्राप्त नहीं होते और अधोगति में जाते हैं।

इस प्रकार, स्पष्ट है कि संत-काव्य-परंपरा के अनुसार वील्होजी ने लोक-कल्याण की भावना को प्राय दिया है। इन्होंने अपने काव्य के माध्यम से उस समय की जनता का मार्गदर्शन किया है और उसे बहुत सारी व्याधियों से बचाने का प्रयास किया है। संक्षेप में संत वील्होजी अपने लोक-कल्याणकारी दृष्टिकोण के कारण विशेष महत्त्व रखते हैं।

-अंशु शुक्ला
शोध छात्रा, हिन्दी विभाग
मुम्बई विश्वविद्यालय, मुम्बई

भजन

चालो सम्भराथल चालां, गुरु जम्भेश्वर के देश।
गुरु जी अगम पूरी से आए, सच्च मार्ग बताए,
सबदों से ज्ञान समझाएं, मेरा गुरु बड़े दरवेस॥

निरमल पावन वाणी, समझे वो है ब्रह्म ज्ञानी।
सफल होवै जिन्दगानी, मिट ज्या सारा कलेस॥

सम्भराथल धोरे आए, धर्म नियम समझाए।
अमृत पाहल पिलाएं, प्रभु हृदय बसे हमेस॥

सम्भराथल महिमा भारी, थान पूजे परजा सारी।
सबके हो हितकारी, तुम ब्रह्मा विष्णु महेश॥

सुन लो मेरे भाई बहना, मानो श्री जम्भेश्वरजी का कहना।
शिव कुमार सत पर रहना, तू मिटा ले राग द्वेष॥

-शिव कुमार सींवर, गायणाचार्य
धांगड़, फतेहाबाद मो.: 9813237682

माँ तुझे क्या उपमा दूँ

माँ तुझे क्या उपमा दूँ।
तेरा स्नेह है या सागर की गहराई।
तेरा हृदय है या विशाल धरा।
तेरा शील स्वभाव है या पूर्णिमा का चांद।
तेरा चेहरा है या ये अम्बर।
तेरा स्तनपान है या अमृतरस।
तेरी गोद है या पीपल की छांव।
तेरी लोरी है या साक्षात् सरस्वती (लय)।
तेरे पसीने की खुशबू है या गुलाब गंध।
भान होता है मुझे ये।
सचमुच सारी सृष्टि समाई है तुझमें।
फिर बता माँ तुझे क्या उपमा दूँ मैं।

-सानिया सुपुत्री श्री देवराज सीगड़
गांव लीलस (भिवानी)

मुक्ति का अद्भुत साधन "श्रीमद्भगवदगीता"

भगवान श्रीकृष्ण द्वारा कुरुक्षेत्र की पवित्र धरा (ज्योतिसर) से अर्जुन को मानव मात्र के कल्याण के लिए दिये गए उपदेश, जो युद्ध के मैदान से परोसा गया, का नाम है "श्रीमद्भगवदगीता"। गीता जयन्ती का पर्व हर वर्ष कुरुक्षेत्र में बड़े उत्साह और उल्लास से मनाया जाता है। जहाँ देश-विदेश के लाखों श्रद्धालु इस गीता महोत्सव में शामिल होकर मुक्ति की कामना करते हैं। इस वर्ष यह 25 नवम्बर से शुरू हुआ है।

हर मनुष्य अपने जीवन में अस्थाई सुन्दर ठिकाना (कोठी, बंगला, मकान) बनाने के लिए पूरा जीवन लगा देता है, मगर स्थाई ठिकाने (मोक्ष) के लिए कुछ पल निकालने मुश्किल हो जाते हैं। जन्म से अच्छे संस्कारों में पला-बढ़ा मनुष्य अगर जिम्मेवारियों से निवृत्त होने के बाद अगर सार्थक प्रयास करे तो मुक्ति की मंजिल पा सकता है। गुरु जम्भेश्वर भगवान ने भी यही संदेश दिया कि मेरी धरती पर आने का लक्ष्य मात्र- "जीवों की जुगती और मुवों की मुक्ति है।" कई बार लोग दुनिया की चकाचौंध से प्रभावित होकर अपने धर्म से भटक जाते हैं। जबकि स्वधर्म में जीना और स्वधर्म के लिए मरना भी मुक्ति का रास्ता बताया गया।

धर्म ग्रंथों और संत-महात्माओं के प्रवचनों से पता चलता है कि ज्ञानी लोग स्वर्ग नहीं चाहते, क्योंकि स्वर्ग तो मात्र सुख भोगने का स्थान है, कर्म करने का नहीं। वहाँ सद्कर्म संचय नहीं किये जा सकते, इसलिए संचय किये गए सतकर्मों का फल पूरा होने पर मृत्युलोक में पुनः आना पड़ता है। इसलिए ज्ञानी लोग स्वर्ग से श्रेष्ठ मुक्ति को मानते हैं जहाँ से लौटना नहीं पड़ता है।

श्रीकृष्ण भगवान श्रीमद्भगवदगीता के सातवें अध्याय में कहते हैं कि "हे भारत श्रेष्ठ अर्जुन! चार प्रकार के जीव मुझको भजते हैं, दुखिया, जिज्ञासु, ऐश्वर्य की कामना करने वाला और ज्ञानी। जिनमें मुझे ज्ञानी लोग अत्यन्त प्रिय हैं। यद्यपि सभी भक्त प्रिय है, मगर ज्ञानी तो मेरी आत्मा है। ऐसा महात्मा अत्यन्त दुर्लभ है।" ज्ञानी मनुष्य भगवान से कुछ नहीं मांगता। हम तो हर पल भगवान से कुछ न कुछ मांगते ही रहते हैं इसलिए दुखिया, जिज्ञासु और ऐश्वर्य पाने वाले लोगों में से एक है।

भगवान श्रीकृष्ण मुक्ति का रास्ता बताते हुए कहते हैं कि "नित्यप्रति मेरा ध्यान करने वाला योगी, अन्त समय में सब इन्द्रियों को रोक कर, मन की हृदय में धारण कर, समाधि योग में स्थित 'ओ३म्' अक्षर का उच्चारण करता हुआ, देह त्यागता है, उसे 'मोक्ष रूप' उत्तम गति प्राप्त होती है।

भगवान श्रीकृष्ण कहते हैं कि भारत श्रेष्ठ अर्जुन, "संसार को चलाने वाली दो गतियाँ शुक्ल पक्ष और कृष्ण पक्ष है। शुक्ल पक्ष में जाने वाले जीव वापिस नहीं लौटते और कृष्ण पक्ष में जो मृत्यु को प्राप्त होते हैं वह पुनः लौट आते हैं।"

भगवान श्रीकृष्ण ने सौलहवें अध्याय में मोक्ष पाने वाले जीवों के गुणों का बखान किया है। अभय, युद्ध सतोगुणी होना, ज्ञान, योग, निष्ठा, दान, इन्द्रिय दमन, यज्ञ करना, तप, सरलता, अहिंसा, सत्य, क्रोध, त्याग, शान्ति, चुगली न करना, सब प्राणियों पर दया, तृष्णा से बचना, कोमल स्वभाव, लज्जा, चपलता का त्याग, तेज क्षमा, धृति, पवित्रत्ता, द्वेष रहित, अभिमान न करना ये गुण मोक्ष के अधिकरी जीवों में होते हैं।

हमें अपने बच्चों में शिक्षा के साथ-साथ अच्छे संस्कारों के बीज बोने चाहिए। चाहे हम कितनी ही ऊँचाइयों को छुएँ, मगर अपने धर्म और समाज के प्रति हमेशा जवाबदेह है, चाहे हम कहीं भी रहें। धर्म के प्रति सजग रहे। ऐसी भावना बच्चों में विकसित करनी चाहिए। सुबह-सवेरे हवन का महत्त्व गुरु जम्भेश्वर भगवान ने हमें बताया व पर्यावरण का सन्देश, वृक्षों का महत्त्व, जो 500 वर्ष पूर्व जो बातें कही गई, आज कितनी कारगर साबित हो रही हैं। हमें बच्चों को गंगा, गीता और गायत्री का महत्त्व भी बताना चाहिए, जो मुक्तिदायिनी है।

-नेकीराम भादू
704, टी-2, विपुल गार्डन, धारूहेड़ा, रेवाड़ी
मो.: 9991153945

जाम्भाणी कुण्डलियाँ

धरती मेरे ध्यान में, वनस्पति में वास।
कैर कंकेड़ी बोरड़ी, और खेजड़ी खास।
और खेजड़ी खास, पीलू मुरधर रा आंबा।
अवजू मण्डल अवाज, अकाश खड़ो बिन थांबा।
कह उद्धव कविराय, जतन जगती रा करती।
पापी अपापी पाय, धिन हो माता धरती ॥1 ॥
कण बिन कूकस कोकला, काम कदै न आय।
भूसो भलही कूटियै, कण भूसा में नांय।
कण भूसा में नांय, गुण बिन गाठौ झौड़ो।
परमारथ पहचान, सवारथ सगळा छोड़ो।
कह उद्धव कविराय, हरि ओम विष्णु-विष्णु भण।
काचो काम न कीजिये, करड़ो काकरो कण-कण ॥2 ॥
सतवादी हद साँच में, चालै जग रे मांय।
झूंठै झूंठ रचावियो, जागे नी तू काय।
जागे नी तू काय, झूठै रा ही फल झूठा।
छोड़ सकल री कामना, आवै ना अब पूठा।
कह उद्धव कविराय, ना करिये वाद-विवादी।
भाव जिसा भगवान, सठ बण तूं सतवादी ॥3 ॥
सतगुरु कहै सुकरत कर, भवै 'ज भवजल पार।
साथै चालै साँवरा, विसन नाम ततसार।
विसन नाम ततसार, साँसा सिमरण कीजै।
हद भूमी पर भार, पापी 'ज परलय कीजै।
कह उद्धव कविराय, पुरुष पुरातन पुरु।
हरि सूँ देय मिलाय, जग में साँचो सतगुरु ॥4 ॥
सार जगत रो साँभळो, हरि भजणो हरमेश।
पापों रा परिहार प्रभु, लागे नहीं लवलेश।
लागे नहीं लवलेश, नर 'ज तन हद अणमौला।
करलै सुकरत काम, जब तलक यह चौला।
कह उद्धव कविराय, यह मिलै न बारम्बार।
दुरगत होसी दैखलै, है सुकरत में सार ॥5 ॥
खोज करो सतपंथ री, सो सतगुरु दियो बताय।
चीलै-चीलै चालियै, भूलो भरमो काय।
भूलो भरमो काय, संतन री संगत कीजै।
हरि प्रसन्न हरमेश, संत सज्जन पर रीझै।
कह उद्धव कविराय, मन-माळा में हद मौज।
सतपथ (री) सोजी पड़ै, खळ खरतर कीजै खौज ॥6 ॥
समरथ सतगुरु कीजिये, भव से करदे पार।
नुगरा नर भटकत फिरै, नहीं जगत में सार।
नहीं जगत में सार, सतगुरु पवन रा झौका।
मिले न दूजी बार, अब मत चूको शुभ मौका।
कह उद्धव कविराय, पाय पण निरमळ सतपथ।
अघ मग करदै दूर, परमेसर सतगुरु समरथ ॥7 ॥
कामी रो चित काम में, क्रोधी काळो नाग
मदवालो मतवालो हद, लोभी भागम भाग।
लोभी भागम भाग, मोही 'ज मोह अपारा।
आफळ कूटो अनाप, मत्सर करियै किनारा।
कह उद्धव कविराय, वश कर विकारा नामी।
औरां ने उपदेश दे, (ये) अधम नर कपटी कामी ॥8 ॥
करम साँतरा कीजिये, पहलै कीजै आप।
परमारथ पण कीजियै, धरम करम पुन धाप
धरम करम पुन धाप, पाप नह करै पसारा।
दुनियां दैखे दाय सूं, वगत पर विरद विचारा।
कह उद्धव कविराय, परमेसर जगतपति परम।
दे औरां उपदेश, पहलै करियै खुद करम ॥9 ॥
सत्य सनातन जगत रो, मरणो एकण बार।
आया है सो जायेगा, इण में फरक न फार।
इणमें फरक न फार, मूवा जग परलय जाणो।
सुकरत करलो आज, फैर मिलै नहीं टाणो।
कह उद्धव कविराय, चले ना तर्क अर तथ्य।
कर सुकरत सदाई, मरणों सनातन सत्य ॥10 ॥

-उदयराज खिलेरी अध्यापक
रा.उ.मा.वि. सेसावा, जिला-जालोर
(राजस्थान) 343041
मो. : 09828751199

बधाई सन्देश

ममता बिश्नोई सुपुत्री श्री वीर विक्रमजीत साँवक, निवासी चक 57 एल.एन.पी., पदमपुर, जिला श्री गंगानगर ने एम.एससी. (फूड्स एण्ड न्यूट्रीशन) में स्वामी केशवानन्द राजस्थान कृषि विश्वविद्यालय, बीकानेर में सर्वोच्च अंक प्राप्त कर दूसरी बार स्वर्ण पदक प्राप्त किया है। आपने 2015 में भी बी.एससी. में स्वर्ण पदक प्राप्त किया था।

रिद्धम सुपुत्र श्री अशोक पूनिया, निवासी गांव मंगाली, जिला हिसार का चयन M.G.I.M.S. वर्धा (नागपुर) में M.B.B.S. के लिए हुआ है।

लव पूनिया सुपुत्र श्री विष्णु पूनिया, निवासी हिसार का चयन हिसार जिले की अंडर 14 आयुवर्ग की BCCI क्रिकेट टीम में हुआ है।

माँगीलाल गोदारा सुपुत्र श्री कालूराम गोदारा निवासी गांव रासीसर, तह. नोखा, जिला बीकानेर का चयन (Adventure Wing) पैरामोटर पायलट के पद पर हुआ है।

विक्रम पूनिया सुपुत्र श्री बलवन्त सिंह पटवारी, निवासी भोडियां बिश्नोईयान हाल निवासी मण्डी आदमपुर, हिसार की नियुक्ति Currency Note Press (a unit of SPMCIL), नासिक, महाराष्ट्र में Supervisor (Technical Operations) के पद पर हुई है।

सियाराम सुपुत्र श्री भूप सिंह खिचड़ (मार्केट कमेटी), निवासी गाँव सदलपुर, तह. मण्डी आदमपुर, हिसार का चयन सीमा सड़क संगठन अधीनस्थ रक्षा मंत्रालय में जूनियर इंजीनियर (मैकेनिकल) के पद पर हुआ है। इसके अतिरिक्त आपका चयन भारतीय रेलवे में भी हो चुका है।

नेहा बिश्नोई सुपुत्री श्री प्रेमप्रकाश बिश्नोई, निवासी सुरतगढ़, श्रीगंगानगर का चयन राजस्थान विद्युत वितरण निगम में जूनियर इंजीनियर–1 के पद पर हुआ है।

आप सबकी इस उल्लेखनीय उपलब्धि पर बिश्नोई सभा, हिसार व अमर ज्योति पत्रिका की ओर से हार्दिक बधाई व उज्ज्वल भविष्य की शुभकामनाएँ।

आयुर्वेद के अनुसार षड्ऋतुओं में आहार-विहार

"आयुसो वेदः आयुर्वेदः" अर्थात् आयु का वेद आयुर्वेद है। आयुर्वेद के अनुसार विभिन्न ऋतुओं की प्रकृति और प्रभाव भिन्नता के आधार पर किस ऋतु में किस ढंग का आहार-विहार रखना चाहिए, इसका ज्ञान प्रत्येक व्यक्ति को स्वास्थ्य की रक्षा के लिए रखना परमोपयोगी है।

ऋतुओं के विभाजन के विषय में शल्य शास्त्र के रस प्रकरण में कहा गया है कि संवत्सर के छः योग होते हैं जो छः ऋतुओं के नाम से जाने जाते हैं- इनमें वसन्त, ग्रीष्म, वर्षा, शरद, हेमन्त और शिशिर ऋतु हैं। इन ऋतुओं में तीन ऋतुएँ सूर्य के उत्तरायण तथा तीन ऋतुएँ सूर्य के दक्षिणायन होने पर होती हैं। इनको चरक सूत्र में क्रमशः आदानकाल और विसर्गकाल भी कहा गया है।[1]

आदान काल- आदान काल को आग्नेय काल भी कहा गया है। सूर्य, वायु और चन्द्रमा अपने स्वभाव से मार्ग का ग्रहण कर मेषादि राशियों पर जाकर काल ऋतु, रसदोष और देहबल की उत्पत्ति ये इसके प्रमुख कारण होते हैं।[2]

आदानकाल में प्रकृति तथा शारीरिक स्थितिः आदानकाल में सूर्य अपनी किरणों द्वारा जगत के स्नेह भाग को ग्रहण कर लेता है तथा वायु रुक्ष एवं तीव्र होकर स्नेह भाग का शोषण करती है। इसके परिणामस्वरूप शिशिर हेमन्त और ग्रीष्म ऋतुओं में रुक्षता उत्पन्न हो जाने पर रुक्ष रस जैसे तिक्त कषाय और कटु रसों की वृद्धि हो जाने से मनुष्य के शरीर में दुर्बलता आ जाती है।[3क]

भोगवादी परमवायुःसंयोगादुभवर्यकृता।[3ख]

रौक्ष्यात् कशयोरुक्षाणाप्रवरीमध्यमः कटुः।[3ग]

विसर्ग काल- इस काल में आदान काल की अपेक्षा वायु अत्यन्त रुक्ष नही बहती है। विसर्गकाल में चन्द्रमा पूर्ण बली रहता है और समस्त भूमण्डल पर अपनी किरणें बिखेरकर उसे निरन्तर तृप्त करता रहता है इसलिए इस काल को सौम्यकाल कहा जाता है।[4]

विसर्गकाल में प्राकृतिक व शारीरिक स्थिति- विसर्गकाल में सूर्य दक्षिण दिशा की ओर गमन करना प्रारम्भ करता है उस समय उसका स्वाभाविक मार्ग दक्षिणायन रहता है। मेघ, वायु तथा वर्षा के कारण से उसका तेज भी कम हो जाता है। इस समय चन्द्रमा पूर्ण बली रहता है एवं वर्षा के कारण जगत् का ताप शान्त हो जाता है। अतः अम्ल, लवण और मधुर ये रुक्ष, स्निग्ध रस वाले मनुष्य के शरीर में प्रतिदिन बल बढ़ाने वाले हैं।[5]

आदान काल व विसर्गकाल के प्रारम्भ में मनुष्य के शरीर में दुर्बलता, इन दोनों के मध्यकाल में मनुष्य के शरीर में मध्यबल तथा विसर्गकाल के अन्त और आदान काल के प्रारम्भ में मनुष्य उत्तम बल वाला होता है।

1) हेमन्त ऋतुचर्या- हेमन्त ऋतु में सर्दी पड़ती है। यह ऋतु स्वास्थ्य निर्माण हेतु सर्वाधिक उपयोगी है। इसमें जठराग्नि बढ़ जाती है, जिसके कारण मनुष्य को भूख अधिक लगती है। इसमें मनुष्य को भोजन में अधिकतर पौष्टिक आहार ग्रहण करने चाहिए। यह ऋतु औद्-द्रव्य में गुरु आहार को पचाने में समर्थ होती है।[6]

इस ऋतु में जठराग्नि के प्रबल होने से भूख अधिक बढ़ जाती है ऐसी अवस्था में गुरु आहार न मिलने के कारण प्रबल जठराग्नि धातुओं में प्रथम रसधातु को जला डालती है। अतः वायु का प्रकोप शरीर में बढ़ जाता है।[7]

हेमन्त ऋतु में आहार- इस ऋतु में जठराग्नि के बढ़ जाने से गरिष्ठ आहार लेना चाहिए। इसमें स्निग्ध पदार्थ, अम्ल, लवण रस आदि खाना चाहिए और हेमन्त ऋतु में बने पदार्थ जैसे मलाई, रबड़ी, छेना, ईख से बने पदार्थ गुड़, चीनी, खाँड आदि। तेल व घी में पकाये चावल और गरम जल का सेवन करने से शरीर स्वस्थ रहता है एवं आयु की वृद्धि होती है।[8]

हेमन्त ऋतु में विहार- इस ऋतु में मनुष्यों को अपने शरीर में तेल आदि का मर्दन करना चाहिए। गरम जल से स्नान, धूप का सेवन तथा उष्ण गृह में रहना चाहिए वाहन, शयन, आसन कपड़ों को पर्दे आदि से आवृत्त कर

रखना चाहिए। रुई के बने भरा वस्त्र, अजिन् सुखकारी रोम वाले चर्म कौशेय वस्त्र, सन, जूट से बने वस्त्र, ऊनी और शरीर पर भारी वस्त्र धारण करना तथा घिसे हुए अगर का शरीर पर गाढ़ा लेप लगाना लाभदायक है।[9]

आहार विहार का परिहार- शीतकाल के आ जाने पर वातवर्धक एवं लघु अन्नपान, प्रवाद तीव्र वायु, अल्प भोजन और जल में धुली हुई सत्तू आदि का सेवन नहीं करना चाहिए।[10]

2. शिशिर ऋतुचर्या- सामान्य रूप से हेमन्त और शिशिर ऋतु का आहार-विहार एक जैसा ही है परन्तु शिशिर ऋतु की कुछ विशेषताएँ हैं। आदान काल होने से शिशिर ऋतु में रुक्षता आ जाती है तथा वायु एवं वर्षा के कारण शीत पड़ने लगता है। अत: इसमें भी हेमन्त ऋतु की विधियों का ही पालन करते हुए विशेषतया तीव्र वायु रहित निवास तथा उष्ण गृह में रहना चाहिए।[11]

शिशिर ऋतु में वर्ज्य आहार- शिशिर ऋतु में कटु, कषय, तिक्तरस तथा वातवर्धक, हल्के व शीतपेय का सेवन नहीं करना चाहिए।[12]

3. बसन्त ऋतु- शिशिर ऋतु के व्यतीत होने पर बसन्त ऋतु का आगमन होता है। इस समय सूर्य की किरणों से प्रेरित होकर जठराग्नि मन्द पड़ने लग जाती है। अत: मनुष्यों में अनेक प्रकार के रोग उत्पन्न हो जाते हैं। इसमें संचित कफ को दूर करने के लिए वमन और पंचकर्म आदि कराना चाहिए।[13]

बसन्त ऋतु के आहार-विहार- इसमें नियमित व्यायाम, उबटन, कबलग्रह, अंजन तथा गुनगुने जल से स्नान करना चाहिए।[14] शरीर में चन्दन व अगर का लेप, गेहूँ, जौ आदि से बने पदार्थों का सेवन उपयुक्त होता है।[15] निर्गत दोष रहित सीधु और मधु निर्मित पेय पदार्थ का सेवन करना चाहिए।[16] इस काल में स्त्रियों को मधु का सेवन व उपवनों का भ्रमण करना चाहिए।[17स]

बसन्त ऋतु में वर्ज्य आहार-विहार- इस ऋतु में गरिष्ठ भोजन, अम्ल, स्निग्ध और मधुर आहार का परित्याग करना चाहिए। स्वास्थ्य की रक्षा के लिए इस काल में दिन में शयन नहीं करना चाहिए।

4. ग्रीष्म ऋतुचर्या- यह ऋतु आदान काल में आती है। इसमें निम्न आहार-विहार रहने चाहिए।

ग्रीष्म ऋतु में सूर्य अपनी किरणों से संसार के स्नेह पदार्थों को सोख लेता है। इसलिए इस काल में मधुर रस तथा शीत प्रधान द्रव्य, स्निग्ध अन्नपान, चीनी के साथ शीतल मान्य सत्तू एवं शीतल जल का मिश्रण, दूध-चावल आदि का सेवन करने से शरीर की आद्रता का नाश नहीं होने पाता है।[18]

ग्रीष्म ऋतु में वर्ज्य आहार- इस ऋतु में गरिष्ठ भोजन नहीं करना चाहिए। यदि आवश्यक हो तो अल्प मात्रा में करना चाहिए। लवण, अम्ल[19] तथा कटुरस और उष्णवीर्य वाले द्रव्यों का सेवन नहीं करना चाहिए।[20]

ग्रीष्म ऋतु में विहार- इस ऋतु में दिन में हवादार कमरे में तथा रात्रि के समय में शीतल हवादार छत पर शयन करना चाहिए। इस ऋतु में शरीर में चन्दन का लेप स्वास्थ्य के लिये बहुत लाभदायक होता है। मोती, मणि आदि से अपने शरीर को अलंकृत करना पंखों की हवा का सेवन करना और कोमल आसन पर बैठना चाहिए। शीतल जल से भरे तालाबों में स्नान एवं क्रीड़ा करना, सायंकाल उद्यानों में टहलना, पुष्पमालाओं से अपने शरीर को सजाना चाहिए, परन्तु इस काल में स्वास्थ्य लाभ के लिए समागम से बचना चाहिए।[21]

ग्रीष्म ऋतु में वर्जित आहार- मध्याह्नकाल में बाहर धूप में नहीं टहलना चाहिए। लू चलने पर सायंकाल में भी मोटे कपड़ों को पहनकर बाहर निकलना चाहिए। इस काल में व्यायाम नहीं करना चाहिए।[22]

5. वर्षा ऋतु- वर्षा ऋतु आदान काल में आती है। इसमें मनुष्य का शरीर दुर्बल हो जाता है क्योंकि वर्षा ऋतु में दूषित वातादि दोषों से जठराग्नि मन्द पड़ जाती है। अत: खाद्य पदार्थ भी कम पचता है। भूमि से वाष्प निकलते रहने, आकाश में बादल छाये रहने के कारण, जल का अम्ल विषाक्त होने के कारण अग्नि का बल क्षीण हो जाता है और वातादि दोष कुपित हो जाते हैं।[23]

वर्षा ऋतु में सेवनीय आहार- इस ऋतु में खाने-पीने की चीजों में मधु-मिश्रित करके ग्रहण करना चाहिए।

वर्षा ऋतु में शरीर वातादि विकारों से युक्त हो जाता है। अत: भोजन में अम्ल तथा लवण रस और स्नेह द्रव्यों की प्रधानता होनी चाहिए। जठराग्नि की वृद्धि के लिए पुरुषों को भोजन में पुराने जौ, गेहूँ और चावल का प्रयोग करना चाहिए। शाकाहारी व्यक्तियों को आहार द्रव्यों में मूंग के यूश का सेवन करना चाहिए।[24] इस ऋतु में मधु मिला हुआ अल्प मात्रा में माध्विकर (महुए का बना हुआ मद्य) अरिष्ट एवं जल का सेवन करना चाहिए। वर्षा ऋतु में कुएँ, तालाब आदि के जल को उबाल कर पीना चाहिए।[25]

वर्षा ऋतु में उबटन, स्नान, सुगन्धित द्रव्यों का सेवन, देह का घर्षण करना चाहिए। सुगन्धित पुष्पमालाओं को धारण करना स्वास्थ्य के लिए हितकर होता है। इस ऋतु में स्वच्छ एवं सूखे वस्त्रों को धारण करना एवं नमी रहित सूखे स्थानों में निवास करना चाहिए।[26]

वर्षा ऋतु में वर्ज्य आहार- इस ऋतु में जल में मिले हुए सत्तू का सेवन नहीं करना चाहिए। दिन में शयन तथा रात्रि में खुले स्थान पर बैठना और सोना स्वास्थ्य के लिए हानिकारक है। नदी आदि के बरसाती जल का सेवन नहीं करना चाहिए।[27] धूप में बैठना, व्यायाम करना, स्वास्थ्य के लिए हानिकारक है।[28]

6. शरद् ऋतुचर्या:

इस ऋतु में जिन मनुष्यों का शरीर शीतसाम्य वाला होता है उनके अंग सहसा सूर्य की प्रखर किरणों से तप्त हो जाते हैं। फलस्वरूप वर्षा ऋतु में संचित हुआ पित्त शरद ऋतु में प्रकुपित हो जाता है।[29]

शरद ऋतु में सेवनीय आहार- शरद ऋतु में तेज भूख लगने पर मधुर गुण वाले पदार्थों को मिलाकर सेवन करना चाहिए। मधुररस युक्त एवं पित्त शामक अन्न पान करना चाहिए। शाकाहारी व्यक्तियों को सामान्यत: जौ, गेहूँ व चावल का सेवन करना चाहिए।[30] पित्त बढ़ जाने पर उसके शमन के लिये घृत का पान, विरेचन और रक्तमोक्षण क्रिया होनी चाहिए।[31]

शरद् ऋतु में वर्ज्य आहार- इस ऋतु में तेल, चर्बी, माँस जैसे क्षारीय पदार्थों व दही का सेवन नहीं करना चाहिए।[32] इस ऋतु में धूप का सेवन नहीं करना चाहिए। दिन का शयन और पूर्वी हवाओं का सेवन वर्जनीय है। इस ऋतु में श्वेत पुष्पों की माला, श्वेत वस्त्र धारण करना चाहिए । चन्द्रमा की चाँदनी में टहलना हितकर होता है।[33]

अत: ऋग्वेद व आयुर्वेद के अनुसार व्यक्तिगत तथा सामाजिक दोनों के स्वास्थ्य का महत्वपूर्ण स्थान है, जो व्यक्ति एवं समाज स्वास्थ्य के नियमों का पालन करता रहेगा, वह पूर्ण स्वस्थ रहेगा। सम्भावित रोग नहीं हो सकेंगे। अत: चिकित्सा की भी आवश्यकता नहीं पड़ेगी। सामाजिक स्वास्थ्य के लिए समाज के वातावरण का शुद्ध होना भी आवश्यक है।

सन्दर्भ ग्रन्थ सूचि -

1. चरक सूत्र, अध्याय 6/4
2. चरकसूत्र, अ० 6/5
3. वही, अ० 6/6
4. वही, अ० 6/5
5. वही, अ० 6/7
6. वही, अ० 6/9
7. वही, अ० 6/10
8. वही, अ० 11/6
9. वही, अ०14/17
10. वही, अ० 6/18 अ०, 21/5
11. वही, अ० 6/19, 20
12. वही, अ० 6/21
13. वही, अ० 6/22
14. वही, अ० 6/24
15. वही, अ० 6/25
16. वही, अ० 6/27
17 वही, अ० 6/26
18. वही, अ० 6/23
19. वही, अ० 6/27, 28
20. वही, अ० 6/29
21. वही, अ० 6/30, 32
22. वही, अ० 6/29
23. वही, अ० 6/33-34, 1/2
24. वही, अ० 6/34-38
25. वही, अ० 6/39
26. वही, अ० 6/40
27. वही, अ० 6/35
28. वही, अ० 6/36
29. वही, अ० 6/51
30. वही, अ० 6/42
31. वही, अ० 6/44
32. वही, अ० 6/44-45
33. वही, अ० 6/48

-डॉ. वीना बिश्नोई
गुरुकुल कांगड़ी विश्वविद्यालय, हरिद्वार
मो: 7351666621

वील्होजी कृत हरजस

(राग गावड़ी)

राम रहीम विसन विसमलाह, किसन करीम हमारे।
कुकरम जुलम गाय बकरी परि, रूस्यळ मीसल्य तुम्हारै॥1॥
बांभण वांचै वेद पुराणां, काजी कुतब कुराणां।
पाथर पूजै मसीत पुकारै, हरि तत दहु न जाण्यां॥2॥
हिंदू हरि करि हारि न मानै, तुरक तांवसी लीणां।
मेरी कहै हमारी जांणै, दोऊं विड़ि खीणां॥3॥
हिंदू फिरि फिरि तीरथ धोकै, मुसलमान मदीनां।
अलाह निरंजण मन दिल भीतरि, अंतर डेरा दीनां॥4॥
हिंदू कै मन्य पूरब मानै, पछिम मुसलमाणां।
बीच बीच वील्ह को सांमो, सब दिल मांहि समाणां॥5॥

राम, रहीम, विष्णु, बिस्मिल्ला, कृष्ण, करीम ये सब हमारे हैं, जब तुम गाय और बकरी पर जुल्म करते हो तो ये तुम्हारी लिखत झूठी है। ब्राह्मण वेद-पुराण पढ़ते हैं और काजी किताब-कुरान को पढ़ते हैं, ब्राह्मण पत्थर पूजते हैं और मुसलमान मस्जिद में आवाज लगाते हैं। इन दोनों ने ईश्वर के तत्व को नहीं जाना है। हिन्दू कहते हैं, हमारे हरि हैं और मुसलमान कहते हैं, हमारे खुदा हैं। दोनों के मन में फेर है और वे दोनों आपस में लड़कर मरते हैं। हिन्दू तीर्थ जाते हैं और मुसलमान मदीना जाते हैं। अल्लाह और निरंजन दिल के अन्दर ही हैं, इनका स्थान हृदय में है। हिन्दू पूर्व दिशा को शुद्ध मानता है, हमारा स्वामी सबके दिलों में समाया हुआ है।

(राग धनांसी)

संतो अैसा डर डरिये॥1॥
जीव कूं जम को तलब कहत है, हरि चरणां चित धरिये॥2॥
जारी चोरी अर परनंदया अै तीन्यौ परहरीये॥3॥
वैर विरोध काहे कूं कीजै, जीवण नहीं अंति मरीये॥4॥
और अगन्य आ बाण लीयावै, तो आपे जळ होय ठरीये॥5॥
विख हुंता इभ्रत करि लीजै, अजर सबद जे जरीये॥6॥
डरणा है अबके डरि लीजौ, बोहड़ि उधारे न करीये॥7॥
वील्हा जाण्य सींवरि मदसुदन, साध संगति उबरिये॥8॥

हे प्राणी, ऐसे डर से डरो। इस जीव को यम की त्रास मिलेगी, इसलिए ईश्वर के ध्यान में मन लगाओ। चोरी, जारी और परनिंदा, इन तीनों का त्याग करो। किसी से वैर-विरोध न करो, क्योंकि हमेशा के लिए नहीं जीना है, अन्त में सबको मरना है। यदि कोई क्रोध से कहे तो स्वयं को शीतल रहना चाहिए। विष को अमृत बनाओ, अजर (काम, क्रोध, लोभ, मोह, अहंकार) को जरणा करो। इस डर से इस समय ही डरो, उसमें उधार न रखो। कवि वील्हो जी कहते हैं, विष्णु भगवान को पहचान कर स्मरण करो और संतजनों की संगति करो, जिससे उद्धार होगा।

साभार- बिश्नोई संतों के हरजस

बिश्नोई लोकगीत

बनड़े के गीत

बना घोड़ों खड्यो सजो सजायो रे, चढ़ै क्यूं नी रे।
बना काठी ऊपर गरद पड़ी है, झड़कावै क्यूं नी रे।
बना ऊबी बनड़ी अरज करै रे, बतलावै क्यूं नी रे।
बना रो-रो अखियाँ लाल करी रे, मैं संग चलूंगी रे।
बना तूं स जिलै हिसार गो रे, मैं रोहतक जिलै गी रे।
बना तूं स फूल गुलाब गो रे, मैं गैंदा बणूंगी रे।
बना तूं स रात अन्धेरी रे, मैं चाँद बणूंगी रे।
बना तूं बोलै स ऊरै-परै रे, मैं सादी बोली बोलूंगी रे।
बना तेरी-मेरी बोली ना रळै रे, क्या ढंग बणेगा रे ?
बना घड़ी पड़ी सजी-सजायी रे, बांधै क्यूं नी रे॥

---00---

जुवै गो खेलणो बनड़ा छोड़ दे।
जुवै में जीतावै घर गी नार, बनड़ी गो जीवड़ो नूं डरै।
तेरो तो जीवड़ो बनड़ी क्यूं डरै,
तनै घड़ा द्यूं पीली नाथ, बांदी नै बिछिया बाजणा।
कुवै गो बावणो बनड़ा छोड़ दे।
कुवै पर आवै झोला नींद, बनड़ी गो जीवड़ो नूं डरै।
तेरो तो जीवड़ो बनड़ी क्यूं डरै,
तनै घड़ा द्यूं पीली नाथ, बांदी नै बिछिया बाजणा।
दारू गो पिवणो बनड़ा छोड़ दे।
दारू स बंधै भाइयां में बैर, बनड़ी गो जीवड़ो नूं डरै।
तेरो तो जीवड़ो बनड़ी क्यूं डरै,
तनै घड़ा द्यूं पीली नाथ, बांदी नै बिछिया बाजणा॥

---00---

मेरै रे बाग में डेरा मत लगाइये रे,
डेरा मत लगाइये रे, मेरा बाग जनानी है।
तेरै रे बाग का कुछ नाहीं तोडूं,
कुछ नाहीं तोडूं, मेरी नींद घणेरी है।
मैं तनै पूछूं रे कंवर लाडला, तूं ब्यायो है या कुंवारो है ?
मेरै रे ब्याका, तूं क्या पूछै ? मैं पाँच बरस गो ब्यायो हूँ।
पति मेरै की सूरत पिछाणी, डब-डब भर आया नेण।
घर लेजाकर मैं रोटी पोई, तोरी की तरकारी रे।
कनै बेस जीमावण लागी, डब-डब भर आया नेण।
कण तनै मारी, कण ललकारी, कण तनै गाळी दीनी रे ?
सास मारी, नणद ललकारी, देराणी-जेठाणी मनै गाळी दीनी रे।
सास तेरी री रीस मत करियो, नणद नै मुकला देसां रे।
देराणी-जेठाणी नै न्यारी कर देसां, न्यारी कर देसां रे।
राज हुक्म सब थारो रे॥

---00---

साभार- बिश्नोई लोकगीत

लोकगीत हमारी सांस्कृतिक धरोहर है। इन्हें संजोकर रखना हमारा दायित्व है। खेद का विषय है कि आज की युवा पीढ़ी लोकगीतों को भूलती जा रही है। माताओ-बहनों से अनुरोध है कि बिश्नोई समाज में विभिन्न अवसरों पर गाए जाने वाले लोकगीतों को कलमबद्ध कर 'अमर ज्योति' को भेजें ताकि उन्हें प्रकाशित कर भावी पीढ़ी के लिए संरक्षित किया जा सके।

-सम्पादक

वन्य जीवों पर मंडराता संकट

वन्य जीवों पर खतरा लगातार बढ़ता ही जा रहा है, चाहे वो हिरण हो या नीलगाय हर एक वन्य जीव प्रजाति आज इस आधुनिक दुनिया में संकट से जूझ रही है, जैसे-जैसे समय बीतता जा रहा है, वैसे-वैसे ही वन्य जीवों की संख्या लगातार घटती जा रही है। अगर हालात ऐसे ही बने रहे तो वो दिन दूर नहीं जब इन वन्य प्राणियों का नाम केवल कागजों एवं शक्ल केवल तस्वीरों में ही नजर आएगी। आज दुनिया 21वीं सदी या हम कहें कि आधुनिक युग से गुजर रही है। इस वैज्ञानिक युग में तमाम असंभव कार्य भी संभव हो रहे हैं, परन्तु तमाम दावों के बाद भी नहीं कम हो रहा वन्य जीवों पर मंडराता हुआ खतरा। हर रोज घटनाएं घट रही हैं, चाहे वो वनों की कटाई हो या वन्य जीवों का शिकार। वन्य जीवों का शिकार केवल शिकारी ही नहीं करते बल्कि देश और दुनिया की तमाम बड़ी-2 हस्तियां चाहे वो फिल्मी जगत से हो या खेल के क्षेत्र से या फिर उद्योग के क्षेत्र से हर एक बड़े क्षेत्र के लोग शिकार को अपना शौक मानते हैं और शिकार करते हैं और पीछे रहे जाते हैं सवाल केवल एक कि आखिर कब तक ? इस सवाल का जवाब आज की आधुनिक दुनियां के पास नहीं हैं कि आखिर कब रूकेगा ये सिलसिला। इसके अलावा सवाल कई और भी है कि:-

क) क्या वन्य जीवों को धरती पर रहने का अधिकार नहीं है?

ख) क्या वन्य जीवों के बिना धरती ज्यादा सुन्दर दिखेगी?

ग) क्या वन्य जीवों वे बिना दुनिया ज्यादा विकास करेगी?

इन तमाम सवालों, घटनाओं के बाद आज देश-दुनियां, वन्य-जीव संगठन व सामाजिक संगठन आदि सभी के सामने केवल एक ही चुनौती है कि वन्य जीवों को कैसे बचाया जा सके ताकि खिला रह सके यह प्रकृति का सुन्दर फूल।

आइये अब हम नजर डालते है, वन्य जीवों पर मंडराते खतरे एवं बचाव के उपायों पर-

वनों की कटाई: वन्य प्राणियों पर सबसे बड़ा खतरा है, दिन-रात वनों की अंधाधुध कटाई, क्योंकि वन ही वन्य प्राणियों का घर होता है और किसी का घर ही गिरा दिया जाए तो वह कहाँ रहेगा, इसलिए सरकार व वन्य जीव संगठनों को मिलकर वनों की कटाई को रोकने के लिए एक सफल अभियान चलाना होगा, ताकि वन्य प्राणियों पर खतरा कम हो सके।

सड़क यातायात: जब वन्य जीव सड़क पार करते हैं तो कई बार तेज रफ्तार से आ रहे वाहन की चपेट में आ जाते हैं और घायल होकर मर जाते हैं, इस प्रकार की घटना को रोकने के लिए सरकार को कदम उठाने चाहिए। जैसे घनी वन्य जीव आबादी वाले क्षेत्रों में सड़क पर गति अवरोध व वाहन गति सीमा बोर्ड लगवाना आदि क्योंकि दुर्घटना में वन्य जीव के साथ-2 वाहन व वाहन में सवार यात्री को भी खतरा रहता है।

खेतों में कटीली तार: आजकल किसान अपने खेतों के चारों तरफ उंची-2 कंटीली व ब्लेडनुमा तार लगाते हैं और कई बार वन्य जीव भागते-2 इन कंटीली तारों में फस जाते हैं और घायल हो जाते हैं व कई बार ज्यादा खून निकलने के कारण मृत्यु भी हो जाती है, इसलिए किसानों को ब्लेडनुमा तारें नहीं लगानी चाहिए।

आवारा कुत्ते एवं शिकारी: वन्य जीवों के पीछे आवारा कुत्ते एवं शिकारी दोनों ही दौड़ते रहते हैं और कई बार शिकार हो जाते हैं। कई बार मौत या कई बार घायल हो जाते हैं। सरकार व वन्य जीव विभाग को यह

प्रयास करना चाहिये कि आवारा कुत्तों को पकड़वाकर ऐसे स्थानों पर छुड़वाए जहां वन्य जीवों की घनी आबादी न हो व साथ ही शिकारियों पर पैनी नजर रखनी चाहिए।

परमाणु संयत्र एवं उद्योग: पिछले कुछ समय में परमाणु संयन्त्र एवं उद्योग बहुत ही अधिक संख्या में लगे हैं व इन संयन्त्रों व उद्योगों से निकलने वाले जहरीले धुएं, गैस व कचरे से वातावरण प्रदूषित होता जा रहा है व आस-पास रहने वाले हर किसी के जीवन को खतरा है। अत: सरकार को ऐसे उद्योग व संयन्त्र खाली क्षेत्रों में ही लगवाने चाहिए।

सरकार की नाकामी: इनमें एक प्रमुख कारण सरकार की नाकामी भी है कि सरकार व वन्य जीव विभाग सफल कदम नहीं उठा रहे हैं, जिसमें वन्य जीवों को फायदा हो, जैसे वन्य जीव सुरक्षा में चौकसी, समय पर ईलाज, वनों की कटाई पर रोक, शिकारियों को पकड़ना आदि। अगर हम देखें तो केन्द्र सरकार व राज्य सरकार दोनों जगहों पर वन्य जीव सुरक्षा के नियम व प्रावधान बने हुए हैं। जैसे वन्य जीव सुरक्षा विभाग, वन्य जीव रक्षा कक्ष, वन्य जीव सुरक्षा गार्ड, वन्य जीव पार्क, वन्य जीव चिकित्सालय, वन्य जीव अधिनियम आदि, इसके अलावा वाइल्ड-लाइफ एक्ट भी है, जिसके तहत शिकारियों को हाथों-हाथ सजा व जुर्माना का प्रावधान है। इतना कुछ होने के बाबजूद भी वन्य जीव संकट से जूझ रहे हैं, अब इनको बचाने के लिए सरकार के साथ-2 वन्य जीव विभाग, वन्य जीव रक्षा संगठन, सामाजिक संगठन, हर एक वन्य जीव प्रेमी व आम नागरिक को आवाज उठानी होगी व इनको बचाने के लिए आगे आना ही होगा।

-जगत बिश्नोई
सुपुत्र श्री बालुराम खिचड़,
गांव ढाबी खुर्द तहसील व जिला फतेहाबाद
(हरियाणा) मो.: 9416082229

अनुकरणीय पहल

स्वर्गीय श्री मांगीलाल जी एवं श्रीमती रुकमणी देवी बिश्नोई, जम्भेश्वर नगर, भीलवाड़ा के सुपुत्र श्री देवी लाल जी एवं श्रीमती गणपति देवी के सुपुत्र श्री गजराज बिश्नोई का विवाह स्वर्गीय श्रीमती कमला देवी एवं स्वर्गीय श्री रमेश चंद्र जी सिगड़, जंडवाला बिश्नोईयान, हरियाणा, हाल निवास 2NP रायसिंह नगर की सुपुत्री खुशी बिश्नोई के साथ दिनांक 28 नवंबर, 2017 को बीकानेर में सम्पन्न हुआ। इसी परिवार में दिनांक 30 नवंबर, 2017 को ग्राम सेवाड़ा सांचौर जिला जालौर से श्रीमान हरीश जी सारण के सुपुत्र श्री निलेश सारण का विवाह वर्षा सुपुत्री श्री देवीलाल जी के साथ सम्पन्न हुआ। इन दोनों शादियों में किसी भी तरह के दहेज का लेन-देन नहीं हुआ। तीनों परिवारों ने समाज के सामने आदर्श उदाहरण प्रस्तुत किया जो आने वाली युवा पीढ़ी के लिए प्रेरणादायक है।

-अमरचंद बिश्नोई, जिला प्रधान
अ.भा. बिश्नोई महासभा, शाखा भीलवाड़ा

15 नवम्बर, 2017 को श्री विकास सुपुत्र श्री भालसिंह फुरसानी, निवासी सदलपुर हाल निवासी ए.डी.सी. कॉलोनी, सिरसा का विवाह कनुप्रिया सुपुत्री श्री कैलाश माल, निवासी हिसार के साथ सम्पन्न हुआ। विवाह में किसी भी प्रकार का दहेज नहीं लिया गया व समठूनी में केवल 1 रुपया व नारियल लिया गया। इस प्रकार की पहल के लिए दोनों परिवार साधुवाद के पात्र हैं। समाज को ऐसी पहल से प्रेरणा लेकर अनुसरण करना चाहिए।

-रामनिवास बिश्नोई
बिश्नोई मन्दिर, हिसार

हॉस्पिटल मैनेजमेंट है अच्छा विकल्प

वर्तमान समय में स्वास्थ्य के प्रति जागरूकता बढ़ी है, साथ ही लोग अच्छी तथा गुणवत्तापरक सुविधाओं की मांग करने लगे हैं। यही वजह है कि हॉस्पिटल मैनेजमेंट का महत्व बढ़ गया है। हॉस्पिटल मैनेजमेंट, प्रबंधन का एक ऐसा क्षेत्र है, जो कैरियर के कई रास्ते खोलती है। अगर आप भी प्रबंधन के क्षेत्र में ऐसे कैरियर विकल्पों की तलाश कर रहे हैं, जिसमें आपके लिए अवसरों की कमी नहीं हो तो हॉस्पिटल मैनेजमेंट का कैरियर आपके लिए अच्छा विकल्प साबित हो सकता है।

क्या है हॉस्पिटल मैनेजमेंट

हॉस्पिटल मैनेजर का कार्य पूरे संगठन और प्रबंधकीय कार्यों को सुचारू रूप से चलाना होता है। प्रबंधक हॉस्पिटल के भौतिक व आर्थिक संस्थानों का प्रभावी उपयोग सुनिश्चित करता है तथा साथ ही कर्मचारियों को लाभ पहुंचाने व उनके विकास को सुनिश्चित करने का काम भी हॉस्पिटल प्रबंधक का ही होता है। अमेरिका में हुए सर्वे के अनुसार हॉस्पिटल मैनेजमेंट दस शीर्ष देशों में शामिल है, जो कि स्वास्थ्य सेवाओं के आपूर्तिकर्ता व मांगने वालों के बीच सीधे संबंध स्थापित करते हैं। हॉस्पिटल प्रबंधक अस्पताल के प्रबंधन में सुधार, बाहरी रोगियों की चिकित्सा आदि का प्रबंधन करते हैं। हॉस्पिटल प्रबंधक अपने सहायकों की टीम के जरिये प्रशासकीय कार्यों जैसे कि योजनाएं समन्वयन व हॉस्पिटल के भीतर स्वास्थ्य सेवाओं की आपूर्ति सुनिश्चित करते हैं। पहले वरिष्ठ डॉक्टर ही हॉस्पिटल मैनेजर की भूमिका निभाते थे, लेकिन परिवर्तन के दौर में हॉस्पिटल को सुचारू ढंग से चलाने के लिए पेशेवर व दक्ष मैनेजरों की मांग बढ़ गई है। पेशेवर मैनेजरों की मांग हॉस्पिटल को उत्पादकीय, लाभकारी और रोगियों की सुचारू रूप से देखभाल के लिए होती है। इस क्षेत्र में तरक्की करने के लिए हॉस्पिटल मैनेजर के पास वित्तीय व सूचना विषयक उच्च जानकारी, डाटा को व्याख्या करने और विभिन्न विभागों व रोगियों के बीच सूचनाओं की तालमेल करने का गुण होना चाहिए।

कैसे होता है चयन?

हॉस्पिटल प्रबंधन में हॉस्पिटल प्रबंधन स्नातक में प्रवेश मुख्यत: 12वीं में प्राप्त अंकों के आधार पर ही होता है। इसके अलावा ग्रुप डिस्कशन तथा इंटरव्यू के आधार पर भी चयन किया जाता है। चयन करते समय अंग्रेजी भाषा पर पकड़, बातचीत करने की कला, कंप्यूटर ज्ञान तथा प्रबंधकीय योग्यताओं को मुख्य रूप से देखा जाता है।

कौन कर सकता है यह कोर्स?

हॉस्पिटल मैनेजमेंट में स्नातक डिग्री पाने के लिए 12वीं में बॉयोलोजी में कम से कम 50 प्रतिशत अंक होने अनिवार्य हैं। अगर कोई चाहे तो स्नातक डिग्री पाने के बाद हॉस्पिटल मैनेजमेंट में एमबीए या स्नातकोत्तर

प्रमुख संस्थान

- अखिल भारतीय आयुर्विज्ञान संस्थान, नई दिल्ली (www.aiims.edu)
- दिल्ली पैरामेडिकल एंड मैनेजमेंट इंस्टीट्यूट, नई दिल्ली (www.dpmiindia.com)
- अपोलो इंस्टीट्यूट ऑफ हॉस्पिटल एडमिनिस्ट्रेशन, हैदराबाद (www.apolloiha.ac.in)
- इंडियन इंस्टीट्यूट ऑफ सोशल वेलफेयर और मैनेजमेंट, कोलकाता (www.iiswbm.edu)
- टाटा इंस्टीट्यूट ऑफ सोशल साईंस, मुंबई (www.tiss.edu)

तथा डिप्लोमा कोर्स भी कर सकता है। स्नातकोत्तर कोर्सेस करने के लिए योग्यता संस्थान के अनुसार भिन्न हो सकती है। इस क्षेत्र में मुख्यत: प्रोफेशनल कोर्स बैचलर ऑफ हॉस्पिटल मैनेजमेंट, पोस्ट ग्रेजुएट डिप्लोमा इन हॉस्पिटल मैनेजमेंट, मास्टर ऑफ हॉस्पिटल एडमिनिस्ट्रेशन, एमबीए इन हॉस्पिटल एडमिनिस्ट्रेशन और एमडी या एमफिल इन हॉस्पिटल एडमिनिस्ट्रेशन उपलब्ध है। इन सबके अलावा करीबन 70 मान्यता प्राप्त प्रोग्राम इन क्षेत्र में उपलब्ध हैं। कुछ इंस्टीट्यूट हॉस्पिटल मैनेजमेंट में शार्ट टर्म कोर्सेस, सर्टिफिकेट, डिप्लोमा तथा कोरेस्पोंडेंस द्वारा भी मुहैया कराते हैं।

कितने साल का होता है कोर्स?

डीपीएमआई के मुताबिक इस क्षेत्र में कई तरह के कोर्स करने के बाद कैरियर की शुरूआत की जा सकती है। इन सभी डिग्रियों की समयावधि भी अलग-अलग होती है। बीबीएम तथा बीएचए का कोर्स जहां 3 साल का होता है, वहीं एमबीए तथा हॉस्पिटल प्रबंधन में मास्टर्स (एमएचए) करने के लिए दो वर्ष की अवधि निर्धारित है, जो चार छमाही में बंटा होता है। हॉस्पिटल प्रबंधन में स्नातकोत्तर प्रोफेशनल प्रोग्राम 11 माह का होता है तथा ईएमबीए, पीजीडीएचएम तथा एडीएचएम जैसे कोर्सेस करने के लिए एक वर्ष की अवधि सुनिश्चित है।

अवसर : हेल्थ केयर और हॉस्पिटल इण्डस्ट्री में तेजी से हो रहे विकास के कारण इस क्षेत्र में करियर की संभावनाएं सिर्फ भारत तक ही सीमित नहीं है। बाहर के देशों में भी अगर आप चाहें तो जॉब कर सकते हैं। हॉस्पिटल मैनेजमेंट के क्षेत्र में अधिकतर जॉब हॉस्पिटल में ही उपलब्ध है, लेकिन अगर कोई चाहे तो हेल्थ एजेंसी, प्रयोगशाला तथा अन्य स्वास्थ्य से जुड़ी सेवाओं में भी करियर विकल्प तलाश सकता है। सरकारी अस्पताल तथा प्राइवेट अस्पताल दोनों हॉस्पिटल प्रबंधक तथा मैनेजरों की नियुक्ति करते हैं। एक फ्रेशर अगर चाहे तो किसी भी स्वास्थ्य से जुड़ी सेवाओं या किसी अस्पताल में बतौर असिसटेंट हॉस्पिटल प्रबंधक का कार्य शुरू कर सकता है। इसके अलावा उसके पास कई क्षेत्रों में मैनेजर बनने के रूप में कई विकल्प मौजूद हैं। अनुभवी व सीनियर हॉस्पिटल प्रबंधक सीईओ के पद पर भी पहुंच सकते हैं। जिन्होंने हॉस्पिटल मैनेजमेंट में मास्टर डिग्री की हो तथा जिनके पास 4-5 साल का अनुभव हो, वे लेक्चरर बन सकते हैं। कई वर्षों के अनुभव के बाद अपना नर्सिंग होम तथा हॉस्पिटल भी खोल सकते हैं।

हॉस्पिटल प्रबंधक, हॉस्पिटल के भौतिक व आर्थिक संस्थानों का प्रभावी उपयोग सुनिश्चित करने के साथ-साथ कर्मचारियों को लाभ पहुंचाने व उनके विकास को सुनिश्चित करने का काम करता है....

कितनी मिलती है सेलरी

किसी भी हॉस्पिटल प्रबंधक तथा मैनेजर का पारिश्रमिक उस संगठन की संरचना पर निर्भर करता है। भारत में एक जूनियर हॉस्पिटल मैनेजर 25,000 रुपये प्रतिमाह कमा सकता है। वहीं एक अनुभवी तथा प्रशिक्षित हॉस्पिटल मैनेजर 60,000 रुपये से अधिक प्रतिमाह अर्जित कर सकता है। हॉस्पिटल प्रबंधक के लेक्चरर का पारिश्रमिक प्रतिमाह कम से कम 25,000 रुपये होता है। विदेशों में हॉस्पिटल प्रबंधकों की बहुत अधिक मांग है, जिसके चलते वहां पर आप भारत की अपेक्षा कई गुना अधिक मेहनताना पा सकते हैं।

-डॉ. ओम श्रीमाली
बीकानेर (राज.)

बाल कविताएँ

गुरु चिह्नो

ब्राह्मण बड़ा पाखंडी था,
चल रहा था चाल।
बोला दीप जलाऊंगा मैं,
तब बोलेगा बाल।
एक जलाता दो
बुझ जाते,
वो हुआ पसीने में तर।
हो हल्ला मच गया
भीड़ में,
लोहट बोले कुछ तो कर।
पुरोहित लगा बोलने
जोर-जोर से मंत्र।
कभी हिलाता मूंडी अपनी,
कभी फैरता यंत्र।
उछल कूद
मचा मचाकर
हो गया वो पस्त,
आंखें बूंदे बैठे थे
जम्भ देव अब मस्त।
हाथ जोड़कर ब्राह्मण बोला,
मेरा पीछा छोड़ो।
तुम कोई जति या साधु
भ्रम हमारा तोड़ो।
बाल जम्भ ने भरा
दीयों में,
कुएँ का निर्मल पानी,
पांव धरे जब घेरे में
जल गई जोत सुहानी।
गुरु चिह्नों, गुरु चिह्नों
सबद बोला पहली बार,
मरुभूमि में फूट पड़ी
हो जैसे गंगाधार।

राव दूदा

जाम्भोजी से आज्ञा लेकर
गायें पानी पीती थी,
लाड कोड की प्रेम छाया में
खुशी-खुशी वो जीती थी।
दूदा जी ये देख नजारा
होकर रह गए दंग।
प्रभु तेरी लीला कैसी
कैसे-कैसे रंग।
आगे-आगे जम्भ चले,
दूदा ने घोड़ा पीछे लगा दिया,
मिटती देखी जब ना दूरी,
घोड़े को भी भगा दिया।
अब अहंकार से
उतरा दूदा,
बोला मेरे दोष हरो,
मैं पागल सा
भटक रहा हूँ,
खाली मेरा कोष भरो।
काठ मूठ की दे तलवार,
विष्णु रूप ये बोले थे,
जीव जगत की तुम
सेवा करना,
ज्ञान के चक्षु खोले थे।

छिपन छिपाई

पीपासर के बालक बोले,
आओ खेलें
हंसा के लाल!
तुम्हारी बारी भी हम
दे देंगे,
तुम छुप जाओ तत्काल।
मुस्कुराकर ओझल
हो गए,
विष्णु के अवतार,
ढूंढ-ढूंढकर बेहाल
हुए सब, पड़ी ना
कोई पार।
अब मां हंसा के आगे
किस मुँह से जाएंगे?
मां बाप से डांट पड़ेगी
जूते भी तो खाएंगे।
रोते-रोते बालक पहुंचे
लोहट जी के पास,
देखा बाल जम्भ देव तो
चरा रहे गायों को घास।
बालक बोले
अब ना खेलेंगे,
छिपन छिपाई,
तुम बालक हो या जादू कोई
बात समझ ना आई?

साभार- जाम्भोजी की चिड़कली
(कवि सुरेन्द्र सुन्दरम्, श्रीगंगानगर)

अमर रहे अमर ज्योति

गुरु जाम्भोजी की कृपा से
हिसार से छप रही अमर ज्योति
ऋषियों का है शुभ आशीर्वाद
अमर है यह हमारी अमर ज्योति ॥1 ॥
संत साधुओं की है सद्भावना
मनभावन हमारी अमर ज्योति
विष्णु भक्तों की है साधना
अमर है यह हमारी अमर ज्योति ॥2 ॥
बिश्नोई पंथ का विकास बिन्दू
विश्व में चमका रही है अमर ज्योति
समाज की कीर्ति ,यश, गौरव को
जग में फैला रही है अमर ज्योति ॥3 ॥
जाम्भो जी का पावन उपदेश
जग में पहुँचा रही है अमर ज्योति
विष्णु महिमा का गुणगान कर रही
अमर है यह हमारी अमर ज्योति ॥4 ॥
बिश्नोई जनों को अपने कर्तव्यों से
सजग करा रही है यह अमर ज्योति
समाज में खूब जाग्रति ला रही है
अमर है यह हमारी अमर ज्योति ॥5 ॥
बिश्नोई बन्धुओं को जोड़ रही है
यह हमारी दूत अमर ज्योति
जन-जन से नाता जोड़ रही है
अमर है यह हमारी अमर ज्योति ॥6 ॥
उन्नतीस पावन नियमों की धारा का
प्रचार कर रही है यह हमारी अमर ज्योति
जम्भाणी को महका रही है अमर ज्योति
अमर है, हमारी यह अमर ज्योति ॥7 ॥
विश्व का अमर दीप बनेगी एक दिन
अमर है, यह हमारी अमर ज्योति
समाज और देश का प्रतीक होगी
अमर है, हमारी यह अमर ज्योति ॥8 ॥
हमारी शुभ कामना है 'सुधाकर'
फलती फूलती रहे अमर ज्योति
विकास पथ पर सदा चलती रहे
अमर है, हमारी यह अमर ज्योति ॥9 ॥

अभिनन्दन है तुम्हारा नव वर्ष 2018

अभिनन्दन है नव वर्ष तुम्हारा
मुदित है हमारा देश भारत वर्ष।
बज रहा ढोल चहूँ ओर खुशी का
जग में भी तो हो रहा है बहुत हर्ष॥
तुम तो हैं बस नव गीत हमारे
तुम तो हो बस मन मीत हमारे।
मन में भरा रहे बस बहुत हर्ष
अभिनन्दन है तुम्हारा नव वर्ष॥
तुम हो बस नवीन सपने हमारे
तुम हो आकास के सुन्दर तारे।
जन जन के मन में भरा है हर्ष
अभिनन्दन है तुम्हारा नव वर्ष॥
तुम हो युग युग के प्यारे नन्दन
दूर करो जग के दुरूख और क्रन्दन।
जीवन में सदा मिले सुख और हर्ष
अभिनन्दन है तुम्हारा नव वर्ष॥
भारतीय संस्कृति में पले और बड़े हुये
इसकी रक्षा करना है हमारा फर्ज।
जीवन में हमें मिले बस सदा ही हर्ष
अभिनन्दन है तुम्हारा नव वर्ष॥
समाज और देश की हम सेवा करेंगे
जन जन के मन में हम दया भरेंगे।
संतों की सेवा करने में मिलता है हर्ष
अभिनन्दन है तुम्हारा नव वर्ष॥
'सुधाकर' की है वर्ष 18 पर शुभ कामना
मन में भरी है मधुर और मंगल भावना।
नव वर्ष पर देते हो रहा है अपार हर्ष
अभिनन्दन है तुम्हारा नव वर्ष॥

-**ओ.पी. बिश्नोई** (गोयल) 'सुधाकर'
31-प्रियदर्शिनी अपार्टमेन्ट्स
ए-4,पश्चिम विहार, नई दिल्ली
मो.: 9891098790
ईमेल: opvishnoi@hotmail.com

परमधन सन्तोष : गुरु जाम्भोजी की दृष्टि में

जगद्गुरु जम्भेश्वर जी ने बिश्नोई-पंथ का प्रवर्त्तन कर प्राणी-मात्र का बहुत बड़ा उपकार किया। मानव को सही दिशा प्रदान कर जीवन को उन्नत बनाना समाज का मुख्य उद्देश्य रहा है। मानव-जीवन को सुखपूर्वक जीने के कई आयाम हैं, लेकिन सन्तोष उन सबमें श्रेष्ठ है। सन्तोष रूपी धन को परमधन माना है।

अपने ही श्रम के द्वारा जो कर्मानुसार फल मिल जाये, उसी फल में सन्तुष्ट रहना ही सन्तोष कहलाता है। इसके विपरीत, धन-प्राप्ति के लिए दिन-रात होने वाली इच्छा का प्रसार लोभ कहलाता है। लोभ से होने वाले दु:ख का कोई आर-पार नहीं है। उसी प्रकार 'सन्तोषादनुत्तमम् सुखलाभ:' सन्तोष से ही अति उत्तम सुख का लाभ होता है, क्योंकि आवश्यकतानुसार जो कुछ प्राप्त हो जाता है, उसमें ही सन्तुष्टि होती है। ग्रन्थों में भी कहा गया है-

गौधन, गजधन, बाजीधन और रत्नधन खान।
जब आवे सन्तोष धन, सब धन धूर समान॥

सन्तोषी सदा सुखी और लोभी सदा दु:खी रहता है, लोभी पुरुष का जीवन नरकमय बन जाता है। आख़िर यह जीवन इस प्रकार की बर्बादी के लिए तो नहीं मिला है, इसका सदुपयोग तो करना चाहिए, इस जीवन को प्राप्त करके सुख की प्राप्ति होनी ही चाहिए। इसलिए गुरु जम्भेश्वर जी ने सभी शास्त्रों से सहमत यह सन्तोषमय जीवन जीने की कला सिखलाई है, इसे धारण करके कोई भी धनी, निर्धन, छोटा या बड़ा अपने अमूल्य जीवन को सफल बना सकता है।

सन्तोषी सदा सुखी- इस अमूल्य निधि का महत्त्व जीवन में सर्वाधिक है। आदिकाल से लेकर वर्तमान तक, इस सन्तोष रूपी परमधन का महत्त्व उतरोत्तर बढ़ता ही रहा है। आदिमानव को जब तन ढकने का भी भान नहीं था, तब कन्द-मूल, फल खाकर मस्त रहता था। इसी मस्ती का नाम सन्तोष था। उस समय के मानव की आवश्यकताएँ सीमित थी, लेकिन आज के परिवेश में भौतिक इच्छाएँ इतनी प्रबल हो चुकी हैं कि मानव इनकी पूर्ति-हेतु अधिक श्रमशील एवं दु:खी हो गया है, प्राचीन अलमस्ती का आलम काफूर हो गया है।

गुरु जम्भेश्वर जी भविष्यदृष्टा थे। अत: मानव के भावी जीवन को सुखी बनाने हेतु सन्तोष पर अधिक बल दिया। वैसे तो सभी संत-महात्माओं ने इस परमधन पर अपने-अपने विवेक से प्रकाश डाला है। यथा-

देख पराई चुपड़ी, मत ललचावे जीव।
रूखी सूखी खाय के, ठण्डा पानी पीव॥

*****

आधी तो रूखी भली, सारी जो संताप।
जो चाहेगा चुपड़ी, तो खूब करेगा पाप॥

उक्त दोनों पद्यांशों पर विचार करने पर मानव को सादे एवं सन्तोषी जीवन जीने का सन्देश मिलता है। इसी प्रकार, एक सच्चे साधक को भी सन्तोषी रहने का सन्देश दिया है, यथा-

कड़वा मीठा भोजन भख ले, भख कर देखत खीरूं।
धर आखरड़ी साथर सोवण, ओढण ऊनां चीरूं॥

बिश्नोई-पंथ के 29 नियमों में भी सन्तोष का बड़ा गुणगान किया है, यथा-

हानि-लाभ में सुख-दु:ख नहीं पाना,
कर सन्तोष विष्णु गुण गाना।

सच्चा सन्तोषी हमेशा एक स्वर रहता है, लाभ-हानि, सुख-दु:ख का विचार किये बिना विष्णु के स्मरण में मस्त रहता है। संसार में सन्तोषी सन्तों की भरमार रही है। इस सम्बंध में कबीर का एक दोहा दृष्टव्य है-

सांई इतना दीजिये, जामें कुटुम्ब समाय।
मैं भी भूखा न रहूं, साधु न भूखा जाय॥

संसार में बड़े-बड़े राजा-महाराजा, सेठ-धनपति, नवाब-शहंशाह आदि जितने भी योगी-भोगी हुए हैं, सभी दु:खी नजर आते हैं। बाहरी दिखावे में भले ही वे सुख का ढोंग करते हों, पर अन्त:करण में वे बड़े दु:खी हैं। इस प्रसंग में कबीर का यह दोहा बड़ा प्रसिद्ध है-

चाह गयी, चिन्ता मिटी, मनवा बेपरवाह।

जिनको कछु ना चाहिये, सोई शहंशाह॥

सबदवाणी के 90वें सबद में जम्भेश्वर भगवान ने जन-कल्याण के सन्दर्भ में कहा है-

सदा सन्तोषी सत उपकरणा। म्हे तजीया मान अभिमानूं॥

क्षमा, दया व परोपकार को सभी धर्मों में उच्चतम स्थान प्राप्त है। जिसके मन में क्षमा और दया भाव नहीं हैं, वह परहित नहीं कर सकता। परहित तो वही सन्तोषी पुरुष कर सकता है, जिसने अभिमान का परित्याग कर दिया है। वही मानव जन-कल्याण में रत रह कर लोक-मंगल की भावना का पालन कर सकता है। गुरु जम्भेश्वर के हर सबद में कमोबेश लोक- मंगल व सन्तोष की भावना के दर्शन होते हैं। गुरुजी ने अपने 29 नियमों में सन्तोष के महत्त्व को इस प्रकार से समझाया है-

शील व सन्तोष पालन करे, उज्ज्वल राखे अंग।
बाहर भीतर एक रस, कहे मुनि जन संग॥

शील व सन्तोष को धारण कर, अपने मानवी चोले को उज्ज्वल रखें, यानि इस पर कोई कलंक न लगने दें। मनुष्य बाहर, यानि लोक-व्यवहार में शुद्ध आचरण करें और अन्त:करण को पवित्र रखें, ऐसा मुनिजनों का कथन है। सन्तोष कहने में तो एक साधारण-सा शब्द है, पर संसार के राजा-रंक, मानव- दानव, साधु-असाधु सभी में सन्तोष-रूपी अमूल्य धन का मिलना दुर्लभ है। शास्त्रों में इसका बखान तो खूब मिलता है, पर यथार्थ में सभी स्वार्थ में डूबे मिलते हैं, सन्तोषी नहीं।

स्वामी नरोत्तमदास ने सन्तोष का प्रसंग कुछ इस प्रकार रखा है-

गुरु प्रसाद सन्तोष गज, जै नर बैठा जाय।
जग लालच कुकर जींया, जाल सके न लगाय॥

जो मानव गुरु-कृपा से सन्तोष-रूपी हाथी पर सवार हो जाता है, उस पुरुष के लिये इस जगत का लालच नगण्य होता है। यहाँ हाथी एवं कुत्ते का उदाहरण दिया है। हाथी की सवारी करने वाले का कुत्ता क्या बिगाड़ सकता है। इसमें कहने का तात्पर्य यह है कि पुरुष ने सन्तोष-रूपी कवच धारण कर लिया है, उस पर सांसारिक लोभ-लालच का कोई असर नहीं हो सकता-

मानवीय मन मन मंही, लगी लालच लाय।
बां का दूण सन्तोष बिन, बिजो कोण बुझाय॥

जब मनुष्य के मन में लालच की ज्वाला धधक उठी हो, तो उसे केवल सन्तोष के बाँकेपन के द्वारा ही बुझाया जा सकता है। यहाँ सन्तोष को सर्वोपरि आभूषण की संज्ञा दी गई है। सबदवाणी में गुरु जम्भेश्वर भगवान कहते हैं-

हिरदे नाव विसन का जंपो, हाथे करो टवाई।

हृदय में विष्णु का स्मरण व हाथों से अच्छे कर्म करने वाला मनुष्य सदा सन्तोषी रह सकता है तथा उसका मन कभी नहीं भटक सकता है।

राजा भी दुखिया, रंक भी दुखिया, धनपति दुखी विकार में।
बिन सन्तोष महेश सब दुनिया, झूठे तन अहंकार में॥

1. सन्तोष को परम्धन इसलिये माना है, क्योंकि इसके सामने सारे लोभ-लालच तुच्छ लगते हैं।
2. परम्धन सन्तोष की प्राप्ति के बाद में ही मानव सद्कर्मों में लग सकता है।
3. जो सन्तोषी है, वही क्षमाशील है, जो क्षमाशील है, वही परोपकारी है और परोपकारी ही लोकमंगल भावना का वाहक है।
4. सन्तोषी नर हमेशा सुखी होता है, संसार के सभी त्यागी (सन्तोषी) संत लोकमंगल के पुरोधा है।

गुरुदेव जम्भेश्वर भगवान की सबदवाणी के परिप्रेक्ष्य में पूरा ब्रह्माण्ड समाया हुआ है, इसलिए जो व्यक्ति सबदवाणी का ज्ञान करके उसका अनुसरण करेगा, वह कभी भी असन्तोषी नहीं रह सकता है। वह सन्तोष धन से परिपूर्ण तथा खुशहाल रहेगा।

गुरुदेव जम्भेश्वर भगवान की दृष्टि में सत्य, अहिंसा, परोपकार के साथ-साथ सन्तोष ही परमधन है। मानव-मात्र को सुखी बनाने के लिये गुरु जी ने अपनी वाणी में उक्त चारों तत्त्वों का समावेश कर, मानव-मात्र के कल्याण का भरसक प्रयास किया है।

-महेश चन्द्र ढाका
12, ढाका भवन, शिव नगर,
महामंदिर, जोधपुर (राज.)
मो.: 09413649229

इन्हें रोक न पाए कोई सरहद .....

इन्सान ने धरती को बांट लिया, लेकिन परिन्दों ने आसमान को नहीं, धरती पर इन्सान द्वारा बनाई गई, सरहदें, आज उन्हीं को प्रवेश से रोकती हैं, परन्तु परिन्दों के लिए पूरा आसमान एक है।

विश्व में न जाने पक्षियों की कितनी प्रजातियां हैं, जो कि मौसम परिवर्तन के चलते साल में दो देशों में रहती हैं और इन्हें एक-दूसरे देश में पहुँचने के लिए और कितने देशों की सीमाओं को लांघना पड़ता है। निश्चित समय के लिए स्थान परिवर्तित करने वाले पक्षियों को प्रवासी पक्षी कहते हैं, ऐसा ही एक पक्षी है कुरजा पक्षी, जो कि मंगोलिया, साईबेरिया, रूस, तिब्बत, क्रिगिस्तान आदि देशों में रहता है। यह पक्षी यहाँ पर पहाड़ी व मैदानी क्षेत्रों में जलाशय वाले क्षेत्रों में रहता है। परन्तु अगस्त के महीने में इन देशों में शीत ऋतु दस्तक दे देती है व धीरे-धीरे ठण्ड बढ़ने के साथ-साथ बर्फबारी भी होनी शुरू हो जाती है व ठण्ड से बचने के लिए ये पक्षी उड़ान भर लेते हैं। सात समन्दर पार की ऊँची उड़ान और ईरान, अफगानिस्तान, पाकिस्तान आदि देशों के ऊपर से लगभग 6 से 7 हजार किलोमीटर की लम्बी दूरी तय कर ये पक्षी भारत पहुँचते हैं। यहाँ पर गुजरात, राजस्थान, महाराष्ट्र, मध्य प्रदेश आदि स्थानों पर रूकते है। इन जगहों पर ये पक्षी जहाँ-जहाँ जलाशय नजर आते हैं वहां रूकते रहते हैं, इन्हीं स्थान में से राजस्थान में एक छोटा सा गांव है- खीचन, जो कि कुरजां पक्षी के लिए दुनिया भर में जाना जाता है। खीचन गांव जोधपुर जिले की फलौदी तहसील में स्थित है। इस गांव में इन पक्षियों के आने की परम्परा लगभग 200 वर्ष पुरानी है। अब यहां हर वर्ष लगभग पच्चीस हजार के करीब कुरजां पक्षी आते हैं। हर वर्ष सितम्बर महीने के पहले सप्ताह में इन पक्षियों का खीचन में आगमन शुरू हो जाता है। यहां के ग्रामीण भी कुरजां के पहले जत्थे के गाव में पहुंचने के साथ ही अपने-अपने घरों से बाहर निकलकर आसमान में उड़ रहे इन पक्षियों का स्वागत करते हैं। कुरजां पक्षी भी धन्यवाद के लिए पूरे गांव के चारों तरफ कई चक्कर लगाते हैं, जो कि हमेशा अंग्रेजी के अक्षर 'T' की आकृति में उड़ते हैं। ग्रामवासियों द्वारा प्रवासी पक्षियों को मेहमान की तरह रखा जाता है। उनके लिए जलाशयों में पानी का पूरा प्रबंध करना, चुग्गा घर में दाना डालना जो कि अलग से इन पक्षियों के लिए बनाया गया है। घायल पक्षियों का ईलाज करना व ठीक होने तक अलग कमरे में रखना। अब कुछ समय से कुछ सामाजिक संस्थाएं भी गांव में सहयोग हेतु आती हैं। हर शाम लगभग 10 टन ज्वार, चुग्गा घर में डाली जाती है। चुग्गा घर के दानों के अलावा ये पक्षी शाम को खेतों में जाते हैं, जहां कीड़े-मकौड़े (जो कि प्राकृतिक भोजन है) व मतीरी के बीज व जलाशयों पर छोटे कंकड़ आदि भी खाते हैं।

सर्दियों में खीचन गांव के प्रवासी पक्षियों को देखने के लिए दूरदराज से लोग आते हैं व विदेशी पर्यटक भी आते हैं। गांव में पच्चीस हजार की तादाद में मौजूद खूबसूरत पक्षी कुरजां को देखना अपने आप में एक अद्‌भुत नजारा है। पक्षियों का एक साथ आसमान में उड़ना गांव के चारों ओर चक्कर लगाना, शाम को दूर खेतों में जाना, सुबह जल्दी चुग्गाघर में एकत्रित होना, फिर एक साथ जलाशयों पर एकत्रित होना सर्दियों के बाद जब भारत में गर्मी शुरू हो जाती है, तो फिर ये पक्षी अप्रैल माह के पहले सप्ताह में यहाँ से फिर उसी मुद्रा में जाने से पहले पूरे गांव का चक्कर लगाते हैं और वापिस अपने मूल देश मंगोलिया की ओर उड़ान भर लेते हैं।

-**जगत बिश्नोई** पुत्र श्री बालुराम खिचड़
निवासी ढाबी खुर्द, पो. जाण्डवाला बागड़
उप-तह. भट्टू कलां व जि. फतेहाबाद, हरियाणा
मो.: 9416082229

सहज सेवा से प्राप्ति

आज चारों ओर देखते हैं तो बड़े-बड़े नामचीन सिद्ध पुरुषों की महिमा सुनने को मिलती है। बड़े-बड़े मठ, आश्रम बनाए, भांति-भांति के शृंगार किये हुए धर्म की चमक दमक वाले सिद्धि प्राप्त पुरुषों की बातों में दम नहीं है। वे बातें तो बड़ी-बड़ी वैराग्य की करते हैं पर पदार्थों को, भोगों को देखकर उनकी जीभ लप लपाने लगती है। जो सच्चा वैराग्यवान होता है उसकी दृष्टि निराली होती है। वह जिधर से निकलता है, उधर ही बड़ी मस्ती लहराने लगती है क्योंकि वैराग्य की बात रागी के समझ में कैसे आए संत कहते हैं।

आदि अविद्या अटपटी घट-घट बीच अड़ी।
कहो कैसे समझाइए यहां कुएं भांग पड़ी॥

अर्थात् जो बड़े-बड़े बैरागी दिखते हैं वे सत्य में बैरागी होते ही नहीं है। आदिकाल से वैराग्य की परिपाटी और परिभाषा उल्टी पड़ी हुई है क्योंकि जो घट-घट में निवास करता है उसे किसी दूसरे के साथ ढूंढने का प्रयास करना तथा बताना उल्टा ही काम होगा। वह तो सहज ही प्राप्त है। पर यह समझाएं किस-किस को, क्योंकि यहां तो सभी के समझ में यह अविद्या घर कर गई है। जहां दिखता है वैराग्य वहाँ पर नहीं है, वहां पर तो अधिकांश पाखंड ही है।

प्रभु स्मरण के छोटे-छोटे प्रयास है और जो अपने हाथ से छोटे-छोटे सेवा कार्य करते हैं। मीठी वाणी बोलते हैं। किसी को कष्ट नहीं देते हैं। दया भाव को प्रबल रखते हैं। लोभ लालच से दूर रहते हैं। सच्चाई के रास्ते चलते हैं। परमात्मा से प्रीत करते हैं। यही मार्ग और यही विद्या सही में वैराग्य है। ऐसे लोगों की जगत में हंसी उड़ाई जाती है। परंतु उनको इसकी कोई चिंता नहीं होती है। श्री गुरु जांभोजी महाराज सबदवाणी में कहते हैं कि-

रण घटिये के खोज फिरंता।
सुण सेवंता खोज हस्ती को पायो॥
लूंकड़िये के खोज फिरंता।
सुण सेवंता खोज सुरह को पायो॥
मोथड़िये के गूंढ खणंता।
सुण सेवंता लाधो थान सुथानो॥
रांघड़िये को घाट घड़ंता।
सुण सेवंता कंचन सोनो डायो॥
हस्थि चड़ंता गेंवर गुड़ंता।
सुनहीं सुनहां भूंकत कायो॥

परमात्मा के अनुभव तो छोटे प्रयास से भी बड़ी प्राप्ति करवाते हैं। ऐसे प्रयास दिखाई तो छोटे देते हैं परंतु प्राप्ति बड़ी होती है। जैसे- कोई खरगोश के पदचिह्नों को खोजता दिखाई देता हूं और उसे हाथियों का झुंड मिल जाए जैसे कोई लोमड़ी के पदचिह्न खोजता दिखाई दे रहा हो और उसे गायों का झुंड मिल जाए। जैसे कोई घास खोदता दिखाई देता हो और उसके इस प्रयास में महल बन जाए और जैसे कोई कथीर के बर्तन बनाने का प्रयास करता दीखता हो और उसके सोने के बर्तन बन जाए ऐसा ही कुछ चमत्कार है, इन छोटी-छोटी सेवाओं और भावों का।

सही में जो वैरागी होते हैं वह कुछ खास करते दिखलाई नहीं पड़ते हैं तथा संसार में उलझे लोग उनको तथा उनकी क्रियाओं को समझ नहीं पाते और उनके बारे में बुरा-भला कहते रहते हैं। परन्तु वह तो हाथी के सवार की तरह इस संसार में विचरण करते रहते हैं। जिस सवार को चाहे कितने ही कुत्ते भौंकते हो वह उनसे ना घबराता है ना ही उस पर उन कुत्तों के भौंकने का प्रभाव पड़ता है। इसी प्रकार सच्चा बैरागी संसार में रहता है। अत: परमात्मा के अनुभव की विद्या अटपटी है, यह अज्ञानियों की समझ से परे हैं जो इसे सांसारिक महत्त्व से देखते है, उनको यह बहुत तुच्छ लगती है। और उनको सच्चे वैरागी भी सांसारिक दृष्टि में तुच्छ दिखाई देते हैं।

-गोपाल बैनीवाल, जांगलू
बीकानेर (राज.) मो.: 9414973029

मन की शक्ति

किसी ने लिखा है- 'जब सोच चेतना के बड़े दायरे से जुड़ी नहीं होती है तो यह जल्द ही मंद हो जाती है।'

जब आप बड़े हो जाते हैं तो अपनी व्यक्तिगत और सांस्कृतिक वातावरण के आधार पर आप खुद के व्यक्तित्व के बारे में एक मानसिक छवि तैयार कर लेते हैं। इसे हम खुद के अहम् की काल्पनिक छवि कह सकते हैं। इसके अंतर्गत मन की गतिविधियां आती हैं जो खुद को केवल दिमाग की निरंतर सोच से बनाये रख सकती है। अहम् या अहंकार शब्द का अर्थ हर व्यक्ति के लिए अलग-अलग होता है, लेकिन जब मैं इसे यहां प्रयुक्त करता हूं तो इसका अर्थ है खुद का अवास्तविक रूप। यह मन द्वारा निर्मित एक अचेत पहचान है। अहम् के लिए शायद ही वर्तमान का अस्तित्व होता है। वह केवल भूतकाल और भविष्य को ही महत्वपूर्ण मानता है। अहंकार या अहम् की अवस्था में मन इतना दुष्क्रियाशील हो जाता है कि वो सच को पूरी तरह से परावर्तित कर देता है। अहम् की चिंता का विषय हमेशा अतीत को जीवित रखना होता है क्योंकि इसके बिना आपका कोई अस्तित्व नहीं है। भविष्य में खुद के अस्तित्व को बनाए रखने के लिए और वहां मुक्ति या पूर्ति की तलाश की सुनिश्चितता के लिए, यह लगातार खुद के बारे में अनुमान लगाता रहता है। यह कहता है- 'एक दिन जब कुछ ऐसा- वैसा होगा तो मैं ठीक-ठाक, खुश और शांति में रहूंगा'। यहां तक कि अहम् जब वर्तमान के लिए चिंतित होता है तब भी यह वर्तमान को नहीं देखता, बल्कि यह उस वर्तमान को अतीत की आंखों से देखता है और उसके प्रति गलत अनुमान लगा बैठता है।

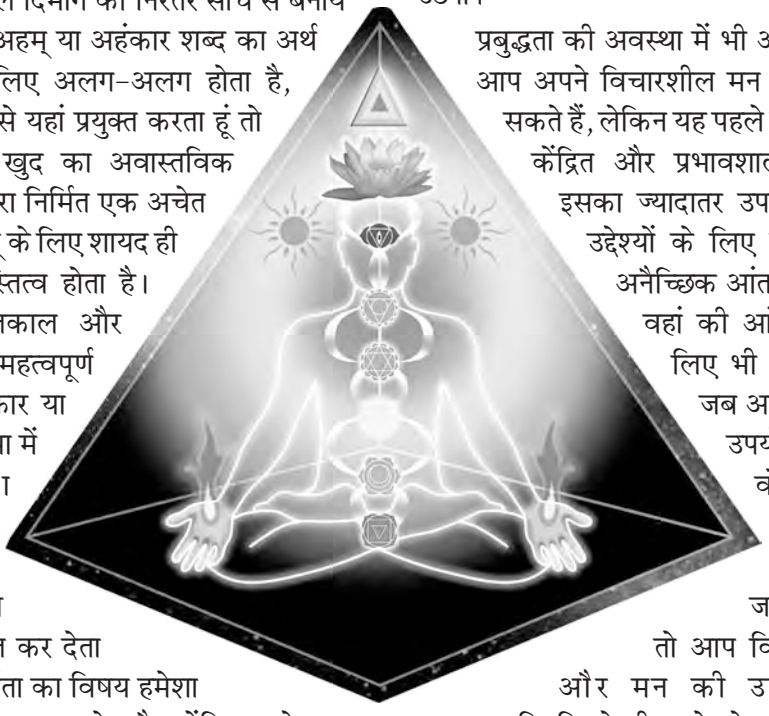

अहम् वर्तमान का अंत:मन के द्वारा अनुमानित एक भविष्य के रूप में करता है। जब आप अपने दिमाग का निरीक्षण करेंगे तो देख सकेंगे कि यह कैसे काम करता है। वर्तमान का पल मुक्ति की कुंजी लिये होता है। लेकिन जब तक आप अपने मन से जुड़े हैं, तब तक आप वर्तमान के पलों का पता नहीं लगा सकते। प्रबुद्धता का अर्थ है अपनी सोच से ऊपर उठना।

प्रबुद्धता की अवस्था में भी आवश्यकतानुसार आप अपने विचारशील मन का उपयोग कर सकते हैं, लेकिन यह पहले से ज्यादा अधिक केंद्रित और प्रभावशाली होगा। आप इसका ज्यादातर उपयोग व्यवहारिक उद्देश्यों के लिए करते हैं लेकिन अनैच्छिक आंतरिक संवाद और वहां की आंतरिक शांति के लिए भी आप स्वतंत्र हैं। जब आप अपने मन का उपयोग करते हैं और वो भी खासकर रचनात्मक समाधान की जरूरत पड़ने पर, तो आप विचार और शांति और मन की उपस्थिति और अनुपस्थिति के बीच डोलने लगते हैं। मन की अनुपस्थिति एक चेतनात्मक अवस्था है जहां विचारों का अभाव होता है। क्या मन केवल इसी रूप में रचनात्मक तरीके से सोच सकता है और क्यों केवल इसी रूप में मन के पास असली शक्ति होती है। जब सोच चेतना के बड़े दायरे से बाहर होती है या उससे जुड़ी नहीं होती है तो यह जल्द ही मंद, पागल और विनाशकारी हो जाती है।

-मृगेन्द्र वशिष्ठ
बढ़वाली ढाणी, हिसार

नववर्ष की प्रफुल्लित किरणें मुबारक

श्रीगुरु जम्भेश्वर भगवान की कृपा से वर्ष 2018 की प्रफुल्लित किरणें आप सबको मुबारिक,
हे सूर्यदेव ! मेरे प्यारे शिरोमणि बिश्नोई समाज और देशवासियों को हमारा ये पैगाम देना,
हे ईश्वर ! उन्हें नववर्ष 2018 में खुशियों भरी प्रत्येक सुबह और हँसती हुई हर शाम देना,
श्री गुरु जम्भेश्वर भगवान कृपा नववर्ष में हर घर जाये शुभ सन्देश और आगे बढ़ती रहें।
जीवन के हर दिन हर पल रहे प्रफुल्लित मन और सदा रहे स्वस्थ संसार तुम्हारा,
श्री गुरु जम्भेश्वर भगवान नववर्ष 2018 की प्रफुल्लित किरणें सदैव हो तुम्हें मुबारिक ॥1॥
शुभ नववर्ष में बिश्नोई समाज और देशवासियों को आशीर्वाद दे गणेश भगवान,
शुभ नववर्ष की पावन वेला में तुम्हें बल बुद्धि और माँ सरस्वती दे विद्या दान,
शुभ नववर्ष की पावन वेला में तुम्हें धन-दौलत से माँ लक्ष्मी करे माला-माल,
शुभ नववर्ष की पावन वेला में तुम्हे दे सुख-स्वास्थ्य श्री धनवन्तरी जी भगवान,
जीवन के हरपल सफलता आपके कदम चूमती रहे, खुशियाँ अंग-संग घूमती रहे,
शुभ नववर्ष 2018 की प्रफुल्लित किरणें सदैव हो देशवासियों को मुबारिक ॥2॥
नववर्ष 2018 की शुभ एवं प्रफुल्लित किरणें समाज और सब देशवासियो तुम्हें,
नववर्ष 2018 की शुभ वेला पर मिले घर और समाज में सबका असीम प्यार,
नववर्ष 2018 की शुभ वेला पर मिले घर-परिवार में तुम्हे सदा रंगोली की बहार,
नववर्ष 2018 की शुभ वेला में सभी देश-प्रदेशवासी करे हरदम पै प्यार की बौछार,
नववर्ष 2018 की शुभ वेला में सभी प्रियजन दें सुख समृद्धि और शान के उपहार,
नववर्ष 2018 की शुभ एवं प्रफुल्लित किरणें सदैव हो देशवासियों तुम्हें मुबारिक ॥3॥
नववर्ष 2018 में आप सबके जीवन में प्यार के दीप से जलते और जगमगाते रहो,
नववर्ष 2018 में आप सबके जीवन में हम आपको और आप हमें याद आते रहें,
नववर्ष 2018 में आप सबके जीवन में हर पल सफलता के सन्देश शुभ आते रहें,
श्री गुरु जम्भेश्वर भगवान से दुआ है हमारी, स्वस्थ-लम्बी हजारी आयु हो तुम्हारी,
नववर्ष 2018 में आप सबके जीवन में हर पल चाँद-सूरज की तरह दमदमाती रहो,
ईमानती बिश्नोई एवं पृथ्वीसिंह का सब देशवासियों सादर तुम्हें नवण प्रणाम,
श्रीगुरु जम्भेश्वर भगवान वर्ष 2018 की प्रफुल्लित किरणें तुम्हें मुबारिक ॥4॥

-पृथ्वी सिंह बैनीवाल
313, सैक्टर-14, हिसार-125001 (हरियाणा)
मो.: 94676-94029

दक्षिण भारतीय बिश्नोई युवा सम्मेलन आयोजित

बिश्नोई धर्म के अनुयायी जहां भी निवास करते हैं अपनी विशिष्ट पहचान रखते हैं। अपने धर्म से जुड़कर नई ऊँचाई प्राप्त करना उनकी नियति व संगति है। यह गौरवशाली क्षण महसूस करने का अवसर था दक्षिण भारतीय बिश्नोई युवा सम्मेलन और उपस्थित विविध संस्कारित श्रद्धालुओं ने भी ऐसा ही अनुभव प्राप्त किया। दक्षिण भारत के तेलंगाना राज्य की राजधानी हैदराबाद में 4 नवम्बर को आयोजित रात्रि जागरण में आचार्य स्वामी सच्चिदानन्द जी ने दीप प्रज्ज्वलित कर जागरण संध्या में अपने मुखारविन्द से गुरु जम्भेश्वर भगवान की जो आरतियां व साखियां गाई उससे वहां उपस्थित हजारों पुरुष व महिलाओं ने बड़े आदरभाव से श्रवण कर अपने आपको प्रभु भक्ति में लीन रखा। वहां उपस्थित अधिकतर राजस्थान के बुजुर्ग माताओं को गुरुवाणी ने मन्त्रमुग्ध कर दिया और वे प्रसन्नता से आत्मविभोर हो गयी। उन्होंने न जाने कितने दिनों बाद रात्रि जागरण में प्रभु भक्ति का अनुभव किया। इसी भक्तिभाव की प्रक्रिया में पिंकी बिश्नोई ने भी मनमोहक भजन प्रस्तुत किया।

5 नवम्बर को सुबह आचार्य जी ने हवन व पाहल कर सुबह के कार्यक्रम का आगाज किया। सभी दूर-दराज से पधारे मेहमानों सहित मेजबान साथियों ने हवन में आहुति दी और तत्पश्चात् भोजन प्रसाद प्राप्त किया। भोजन वितरण पश्चात् कार्यक्रम को आगे बढ़ाने के लिए मेहमानों को मंच पर आमन्त्रित किया गया। समारोह में मुख्य अतिथि के तौर पर अखिल भारतीय बिश्नोई महासभा के राष्ट्रीय अध्यक्ष श्री हीरालाल जी भंवाल, विधायक सुखराम जी सांचौर, विधायक, पब्बारामजी फलौदी, पूर्व विधायक हीरालाल बिश्नोई पूर्व प्रधान महासभा थे। कार्यक्रम की अध्यक्षता श्री जसवन्त सिंह जी बिश्नोई चेयरमैन राष्ट्रीय ऊन विकास बोर्ड ने की। इन सभी मेहमानों को साफा बांधकर सम्मानित किया गया। इसके अतिरिक्त विशिष्ठ अतिथि के रूप में श्री अखिल भारतीय जम्भेश्वर सेवक दल के राष्ट्रीय अध्यक्ष श्री रामसिंह जी कस्वां, सेवक दल राष्ट्रीय महासचिव अजमेर गोदारा, अखिल भारतीय श्री जीव रक्षा के राष्ट्रीय अध्यक्ष

साहब राम जी रोहज, अखिल भारतीय श्री जम्भेश्वर कर्मचारी कल्याण समिति के अध्यक्ष श्री निहाल सिंह जी गोदारा, महासभा के राष्ट्रीय सचिव देवेन्द्र बुड़िया, राष्ट्रीय सचिव सोमप्रकाश सिगड़ का भी साफा बांधकर सम्मान किया गया। विशिष्ट अतिथि के रूप में राजस्थान भाजपा के महामन्त्री कृष्ण कुमार बिश्नोई किशन लाल कड़वासरा, गुजरात का साफा बांधकर सम्मान किया गया।

समाज के मेजबान श्रद्धालुओं के स्थानीय विधायक डी. राजा भी सभा में पहुंचकर अपने आपको हर्षित अनुभव कर रहे थे। उन्होंने अपने उद्‌बोधन में गऊ सेवा पर जोर दिया। इसी श्रेणी में स्थानीय लोकसभा सीट से चुनाव लड़ चुके सतीश अग्रवाल ने भी सभा को सम्बोधित करते हुए सामाजिक समरसता पर प्रकाश डाला। रानीवाड़ा के पूर्व विधायक रतन देवासी भी पहुंचे। इस कार्यक्रम में अखिल भारतीय बिश्नोई युवा संगठन के देश के विभिन्न कौने-कौने से युवा आये हुए थे। राष्ट्रीय उपाध्यक्ष सुनील मांजू, हिसार, राष्ट्रीय महासचिव सुनील गोदारा बैंगलोर, राष्ट्रीय महासचिव रावल ज्याणी जोधपुर,

राजस्थान संरक्षक एडीशनल एस.पी. (रिटा.) जीवनराम जी, राजस्थान प्रदेश अध्यक्ष माधव लोल, पंजाब प्रदेश अध्यक्ष गौरव धतरवाल, राष्ट्रीय कार्यकारणी सदस्य संजय लाम्बा हिसार, राष्ट्रीय कार्यकारिणी सदस्य कमलेश साहू अहमदाबाद, गुजरात प्रदेश अध्यक्ष भजनलाल लोल, अहमदाबाद से जगदीश गोदारा, संयोजक भैराराम बिश्नोई, संरक्षक बाबूलाल गोदारा, उपाध्यक्ष प्रदेश रमेश गोदारा, भगवाना राम कड़वासरा, सिलवासा से दिनेश खिलेरी, प्रदेश सचिव गुजरात जगदीश साहू, हरियाणा प्रदेश सचिव राजीव पूनिया, फतेहाबाद से सुनील मन्त्री, डबवाली सभा सचिव व युवा संगठन के क्षेत्र संरक्षक इन्द्रजीत धारनिया, कुरुक्षेत्र महासभा अध्यक्ष अशोक मांजू आदि लोगों ने महासम्मेलन में भाग लिया।

पर्यावरणविद् खम्मुराम बिश्नोई, दयाराम खिचड़, हरिराम बिश्नोई, पीराराम धायल आदि समाजसेवियों ने पारम्परिक पोशाक धोती कुर्ता में सम्मेलन में प्लास्टिक युक्त रखने में व सुन्दर पर्यावरण संरक्षण के तख्तियों से सुन्दर उदाहरण पेश किया। अखिल भारतीय जीव रक्षा सभा से आए हुए मेहमानों में प्रदेश राजस्थान अध्यक्ष शिवराज जाखड़, रानीवाड़ा से परसराम ढाका, राकेश माचरा ओसिया, सहीराम सरपंच एकलखोरी कल्पेश बोला व लाधुराम मांजू आदि जीव प्रेमियों ने समस्त सम्मेलन में उपस्थिति दर्ज करवाकर सामाजिक एकता का उदाहरण प्रस्तुत किया।

अखिल भारतीय कर्मचारी कल्याण समिति से श्री निहाल सिंह गोदारा, बंसीलाल राहड़, हरनाम भादू, ओम प्रकाश भादू आदमपुर की उपस्थिति ने सम्मेलन को ऊर्जावान बनाये रखा। महासभा सदस्य व जिला भीलवाड़ा प्रधान अमरचन्द दिलोइया, जोधपुर से एडवोकेट अमरू बिश्नोई, लार्सन एवं टर्बो में प्रबंधक भंवरलाल बिश्नोई मुम्बई, अधिवक्ता सुखराम ढाका, श्याम खिचड़ जोधुपर, विकास बिश्नोई जोधपुर, हीरालाल लोल, प्रदेश कांग्रेस कमेटी सचिव जयन्ती लाल, भेराराम चेन्नई, गंगाराम खिचड़ चेन्नई, फरसराम ढाका रानीवाड़ा, मालाराम साहू बैंगलोर, किशन पंवार बडोदा आदि अनेकों महानुभाव उपस्थित थे। मैं सभी उन सभी अनुयायी लोगों से क्षमा चाहता हूं जिनका विवरण स्मरण इस लेख में नहीं कर पा रहा हूं।

महासभा अध्यक्ष हीरालाल भंवाल ने सम्मेलन की महता को समझते हुए पिछले मेले के दौरान शिक्षा सेमीनार को भविष्य में भी जारी रखने को कहा और महासभा का सम्पूर्ण सहयोग का आश्वासन दिया। पूर्व अध्यक्ष हीरालाल लोहमरोड़ भी अपने अनुभव का दौर बताते हुए युवाओं को व्यवसायिक गतिविधियों में हर प्रकार से सहयोग का आश्वासन दिया। विधायक सुखराम जी ने शिक्षा और संस्कारों को साथ-साथ सीखने पर जोर दिया। संस्कारित व्यक्ति ही साफ स्वच्छ समाज का निर्माण कर सकता है। युवा उद्यमी कृष्ण कुमार जी ने उद्यमियों को व्यापार देश की सीमाओं से बाहर जाकर करने के अपने अनुभव को साझा किया और प्रोत्साहित किया कि वे आगे बढ़ें और विदेशों में व्यापार करें।

अन्ततः दक्षिण भारतीय बिश्नोई युवा सम्मेलन की महता इस बात से परिलक्षित होती है कि हजारों श्रोता अपने धर्म के अग्रणी बन्धुओं के विचारों को सुनने के लिए लगातार 6 घंटे तक डटे रहे और सायंकाल के भोजन व्यवस्था भी युवा संगठन द्वारा मेहमानों के लिए की गई थी, तदुपरान्त ही मेहमानों को विदा किया गया।

सम्मेलन की सार्थकता, औचित्य, महत्व को शायद शब्दों में बयान करने में कही शब्द कम पड़ रहे हैं। अनुयायियों ने महसूस किया अपने धार्मिक, सांस्कृतिक सम्बंधों को। सम्पर्कों को आदान-प्रदान एक लम्बे जुड़ाव की ओर बढ़ने का द्योतक है। मूलरूप से जो गहन फायदा हुआ वह ये है कि हमारी धर्म के युवा साथी जो कि अभी पहली पीढ़ी के रूप में यहां व्यपार के लिए आये हैं उन्होंने अपनी आने वाली अगली पीढ़ी के छोटे बच्चों को भी धर्म से जुड़ाव, संस्कृति से जुड़ाव की एक डोर थमाई और सभी को एक माला में पिरोया।

सम्मेलन के सफल आयोजन, व्यवस्था, संचालन सभी कार्यों के लिए अखिल भारतीय बिश्नोई युवा संगठन की तेलंगाना इकाई को साधुवाद देना चाहता हूं जिनके अथक प्रयास से आयोजन एक ऐतिहासिक आयोजन बना ओर धर्म अनुयायियों में नयी ऊर्जा का संचालन कर गया।

-प्रवीन कुमार धारणियां
राष्ट्रीय अध्यक्ष, अ.भा.बि. युवा संगठन
भूना, फतेहाबाद

बिश्नोई सभा, हिसार ने अंतरराष्ट्रीय कुश्ती खिलाड़ी किरण गोदारा को किया सम्मानित

हिसार: बिश्नोई सभा, हिसार द्वारा श्री बिश्नोई मन्दिर के भव्य प्रांगण में अंतरराष्ट्रीय कुश्ती खिलाड़ी किरण गोदारा को 20 दिसम्बर को सम्मानित करने के लिए सम्मान समारोह का आयोजित किया गया। समारोह में बिश्नोई सभा, हिसार के प्रधान प्रदीप बैनीवाल ने किरण गोदारा को दक्षिण अफ्रीका में आयोजित कॉमनवेल्थ रेसलिंग चैम्पियनशिप में (72 किलो भार वर्ग में) स्वर्ण पदक विजेता बनने पर सभा की ओर से सम्मान प्रतीक तथा 21000 रुपये का नगद पुरस्कार देकर सम्मानित किया। उन्होंने कहा कि हम अपनी बेटी को सम्मानित करते हुए गौरवान्वित हो रहे हैं, जिसने पूरे विश्व में समाज का नाम रोशन किया है। किरण ने राष्ट्र मण्डल रेसलिंग चैम्पियनशिप में नाइजीरिया की खिलाड़ी को हराकर स्वर्ण पदक जीतकर न सिर्फ देश का बल्कि हरियाणा तथा हिसार क्षेत्र का मान बढ़ाया है। इससे पहले भी किरण ने बेहतरीन प्रदर्शन करते हुए राष्ट्रीय एवं अंतरराष्ट्रीय स्तर पर कई पदक हासिल किये हैं। उन्होंने कहा कि आज बेटियां बेटों से किसी भी क्षेत्र में कम नहीं है तथा यदि बेटियों को पूरा बढ़ावा दिया जाए तो खेलों में ही नहीं अन्य क्षेत्रों में हर मुकाम हासिल कर सकती हैं।

उन्होंने उपस्थित बच्चों व खिलाड़ियों को किरण को अपना रोल मॉडल बनाने का आह्वान किया। इस अवसर पर किरण ने अपने सम्बोधन में कहा कि उसकी सफलता के पीछे उसके नाना कालीरावण गांव के पूर्व सरपंच स्वर्गीय रामस्वरूप खिचड़ का बहुत योगदान है। इस अवसर पर बिश्नोई सभा की तरफ से किरण गोदारा के कोच श्री विष्णुदास तथा श्री मनोज को भी प्रतीक चिह्न देकर सम्मानित किया जिन्होंने किरण को अंतरराष्ट्रीय खिलाड़ी बनने के लिए उचित मार्गदर्शन दिया। इस अवसर पर बिश्नोई सभा, हिसार ने हरियाणा सरकार से मांग की कि बिश्नोई समाज की होनहार अंतरराष्ट्रीय खिलाड़ी किरण गोदारा को खेल कोटे से हरियाणा पुलिस में डी.एस.पी. के पद पर नवाजे जिससे प्रेरणा लेकर अन्य खिलाड़ी भी राष्ट्रीय एवं अंतरराष्ट्रीय स्तर पर देश का गौरव बढ़ाने का कार्य करें। इस अवसर पर बिश्नोई सभा, हिसार के पूर्व प्रधान सुभाष देहडू, महासभा शाखा हिसार के प्रधान सहदेव कालीराणा, सभा उपप्रधान चौथाराम ज्याणी, अनिल पूनिया सभा कोषाध्यक्ष, डॉ. मदन खिचड़ सहसचिव, रामकुमार भादू एडवोकेट, रायसाहब डेलू एडवोकेट कार्यकारिणी सदस्य, डॉ. सुरेन्द्र खिचड़ रोहतक, अनिल भाम्भू, भजनलाल फुरसानी, मक्खन लाल काकड़, हनुमान गोदारा, चन्द्र सहारण एडवोकेट, नरसी खिचड़, श्रीराम सीगड़, बंशीलाल बैनिवाल कार्यालय सचिव, रामनिवास, विक्रम ज्याणी सहित अनेक गणमान्य लोग उपस्थित थे।

-विष्णु सहारण

व्यवस्थापक, अमर ज्योति, हिसार

नायगांव (मुम्बई) में सम्पन्न हुआ 8 दिवसीय जाम्भाणी महायज्ञ व व्याख्यान

तपो भूमि जुचन्द्र नायगांव में जाम्भाणी साहित्य अकादमी के अध्यक्ष आचार्य स्वामी कृष्णानन्द जी महाराज के सान्निध्य में आठ दिवसीय जाम्भाणी महायज्ञ और सबदवाणी व्याख्यान का समापन हुआ। आचार्य जी ने सबदवाणी को अपने जीवन में धारण करो, ऐसी युवाओं से अपील की।

आचार्य जी ने सात दिन तक लोगों को अपने ज्ञान से लाभान्वित किया व सबदवाणी पर विस्तार से चर्चा की। समाज के युवा जो रास्ता भटक रहे हैं उन्हें गुरु महाराज जाम्भोजी की सबदवाणी से जुड़ने का प्रयास करने का उपाय बताया। स्वामी जी ने अपने समाज में सबसे अनमोल धरोहर हवन सबदवाणी से जुड़े रहने को कहा, वरना हम हमारे समाज के अनमोल धरोहर को कहीं खो न दे, इस बारे में काफी चिंतन किया। स्वामी राजनप्रकाश जी ने सभी कार्यकर्ताओं का आभार प्रकट किया और हर साल यहां पर इस तरह हवन करेंगे, ऐसा संकल्प लिया।

सभी अतिथिगण डॉ., इंजीनियर, वकील, IAS, IPS, Govt. ऑफिसर और श्री गुरु जम्भेश्वर पर्यावरण व जीव रक्षा के सभी नवगठित कमेटी के पदाधिकारियों का साफे बांध और मोमेंटो देकर स्वागत श्री गुरु जम्भेश्वर चेरिटेबल सोसायटी नायगांव की तरफ से किया गया।

मुम्बई विश्वविद्यालय के प्रोफेसर डॉ. करुणाशंकर उपाध्याय जी ने बताया कि जाम्भाणी साहित्य को और गहराई से जांचने और परखने की जरूरत है। उन्होंने बताया कि अभी मुम्बई विश्वविद्यालय ने जम्भसागर पर शोध कार्य भी प्रारम्भ कर दिया है। डॉ. उपाध्याय ने कहा कि अभी डिजिटल युग है तो जाम्भाणी साहित्य को भी हम डिजिटल करने में समाज का पूरा सहयोग करेंगे।

औरंगाबाद से पधारे युवा IRS ऑफिसर श्री अशोक जी बिश्नोई (GST विभाग) ने बताया कि समाज में फैल

रही नशे जैसी कुरीतियां समाज को बहुत नुकसान पहुंचा रही हैं। हमें युवाओं को जागरूक होकर इसके विरुद्ध लड़ने और इसको जड़ से समाप्त करने को कहा। आगे उन्होंने GST पर कारोबारियों में फैले हुए डर को समाप्त किया उन्होंने विस्तार से इसकी जानकारी दी।

पीराराम जी खावा ने अपने संबोधन में बिश्नोई समाज मुम्बई के द्वारा चलाये जा रहे ग्रीन कॉरिडोर मुकाम टू सम्भराथल धोरा की विस्तार से जानकारी दी और समाज व धर्म के प्रति लोगों को जागरूक रहने को कहा। आगे बताते हैं कि हमारे समाज में मृत्युभोज और बालविवाह के विरुद्ध सांचौर में चल रही मुहिम में प्रशासन का सहयोग करने को कहा।

श्री गुरु जम्भेश्वर चेरिटेबल सोसायटी के अध्यक्ष श्री हीरालाल जी ईराम ने बताया कि हम प्रदेश में रहते हैं। सब कुछ विधिवत 29 नियमों के पालन का प्रयास करें। प्रात:काल आप स्नान करें और गुरु महाराज जाम्भोजी का 10 मिनट का ध्यान लगाएं तो भी हम गुरु महाराज से जुड़े हुए रह सकते हैं। उनके अलावा भी कई और समाज के बुद्धिजीवियों ने अपना संबोधन दिया। CA मांगीलाल व CA सत्येन्द्र सहू ने भी अपने विचार प्रस्तुत किये।

-ओ.पी. ढाका, मुम्बई

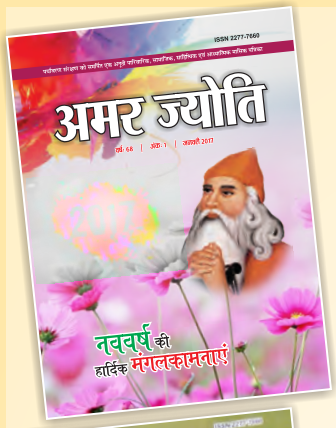

ISSN 2277-7660
अमर ज्योति
नववर्ष की
हार्दिक मंगलकामनाएं

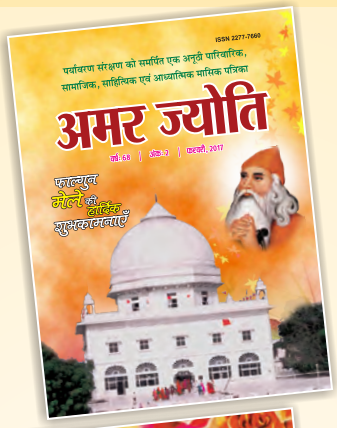

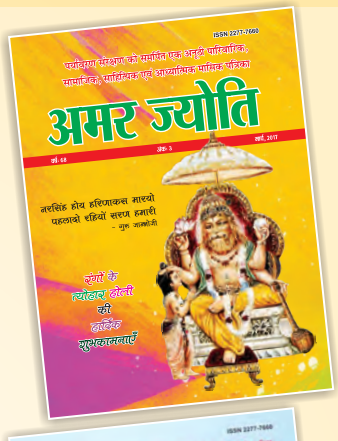

ISSN 2277-7660
पर्यावरण संरक्षण को समर्पित एक अनूठी पारिवारिक,
सामाजिक, साहित्यिक एवं आध्यात्मिक मासिक पत्रिका
अमर ज्योति
फाल्गुन
मेले की
हार्दिक
शुभकामनाएँ

ISSN 2277-7660
पर्यावरण संरक्षण को समर्पित एक अनूठी पारिवारिक,
सामाजिक, साहित्यिक एवं आध्यात्मिक मासिक पत्रिका
अमर ज्योति
रंगों के
त्योहार होली
की
हार्दिक
शुभकामनाएँ

पर्यावरण संरक्षण को समर्पित एक अनूठी पारिवारिक,
सामाजिक, साहित्यिक एवं आध्यात्मिक मासिक पत्रिका
अमर ज्योति

पर्यावरण संरक्षण को समर्पित एक अनूठी पारिवारिक,
सामाजिक, साहित्यिक एवं आध्यात्मिक मासिक पत्रिका
अमर ज्योति

ISSN 2277-7660
अमर ज्योति
पर्यावरण अंक

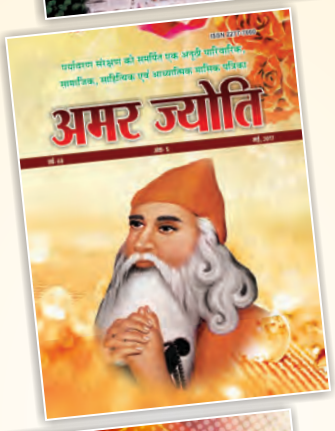

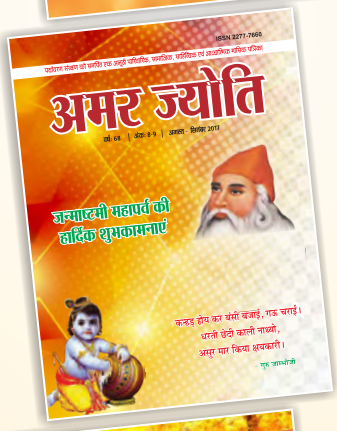

अमर ज्योति
पर्यावरण अंक

ISSN 2277-7660
अमर ज्योति
जन्माष्टमी महापर्व की
हार्दिक शुभकामनाएं

अमर ज्योति

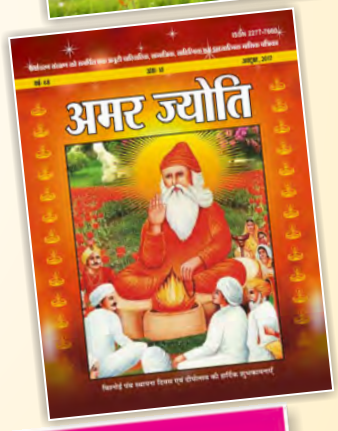

ISSN 2277-7660
अमर ज्योति

ISSN 2277-7660
अमर ज्योति

अलविदा

2017

RNI No. : 12406/57
POSTAL REGD. NO. : L/Regd. NP/HSR/01/2017-2019
L/WPP/HSR/03/17-19

POSTAGE PREPAID IN CASH
POSTED AT : HISAR H.O.
POSTING DATE : 1st OF EVERY MONTH

नववर्ष के अवसर पर सभी को हार्दिक बधाई।

Trillion®
Premium Tea

A Union of Million Flavours

एक अच्छे दिन की शुरूआत
Trillion चाय की चुस्की के साथ

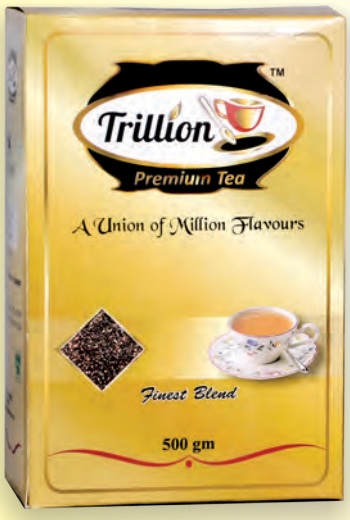

COMING Soon!

Trillion Spices

Contact for Distributorship & Agency

Add:- Neeraj Complex, Mandi Adampur, Distt. Hisar (Haryana)
Email: titraders9@gmail.com | **Mob.:** 9468048085 (whatsapp)

मुद्रक, प्रकाशक प्रदीप बैनीवाल, प्रधान, बिश्नोई सभा, हिसार ने डोरेक्स ऑफसेट प्रिंटर्स, हिसार से बिश्नोई सभा, हिसार के लिए मुद्रित करवाकर 'अमर ज्योति' कार्यालय, श्री बिश्नोई मन्दिर, हिसार से दिनांक 1 जनवरी, 2018 को मुख्य डाकघर, हिसार से प्रेषित किया।

DOREX Printers 9896011117